RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty
well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning
● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

आज की खबर आज ही
जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी
चेतना मंच

पेज 7 बिग बॉस का हिस्सा नहीं बनूंगी...

वर्ष : 27 अंक : 167 website:wwwÐchetnamanchÐ- नोएडा, शनिवार, 07 जून, 2025 Chetna Manch Chetna Manch मूल्य 2 ।00 रु। पेज: 8

देश में कोविड के 5 हजार से ज्यादा मरीज, 4 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी) देश में कोविड-19 संक्रमण के मामलों में एक बार फिर इजाफा देखने को मिल रहा है। शनिवार सुबह तक के आंकड़ों के अनुसार, भारत में एक्टिव मामलों की संख्या 5755 पहुंच गई है। बीते 24 घंटों में 391 नए मामले सामने आए हैं और चार लोगों की मौत हुई है- जिनमें से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल और तमिलनाडु के लोग शामिल हैं।

केरल अब भी सबसे अधिक प्रभावित राज्य बना हुआ है, जहां एक ही दिन में 127 नए कोविड-19 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद गुजरात में 102, पश्चिम बंगाल में 26 और दिल्ली में 73 नए मामले सामने आए। इन राज्यों से कुल मिलाकर देशभर में 391 नए मामलों की बढ़ोतरी हुई। बढ़ते मामलों को देखते हुए केंद्र सरकार ने अस्पतालों की तैयारियों की जांच के लिए मॉक ड्रिल (अभ्यास) आयोजित किए।

महाराष्ट्र में शनिवार को 29 नए मामले दर्ज किए गए जिसके बाद अब राज्य में एक्टिव केस की संख्या 577 पहुंच गई है। शनिवार को एक और मौत हुई, जिससे कुल मृतक संख्या 18 हो गई **।(शेष -4 पर)**

अमन चैन की दुआ में उठे हजारों हाथ

नोएडा (चेतना मंच)। ईद-उल-अजहा (बकरीद) के पावन अवसर पर गौतमबुद्ध नगर जिले की मस्जिदों और ईदगाहों में नमाज शांतिपूर्ण ढंग से अदा की गई। लोगों ने अल्लाह से देश में अमन, चैन और भाईचारे की दुआ मांगी। नोएडा के सेक्टर-8 स्थित जामा मस्जिद में सुबह 6 बजे पहली और 7:15 बजे दूसरी नमाज अता की गई, जिसके बाद एक-दूसरे को गले लगाकर बकरीद की मुबारकबाद दी गई। ईद को देखते जनपद में भारी सुरक्षा रही।

ईद-उल-अजहा पर नोएडा, दादरी, जेवर, भंगेल, निठारी, सूरजपुर और दनकौर समेत जिले भर की मस्जिदों में नमाज कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच अता की गई। प्रशासन ने पहले से ही त्योहार को लेकर व्यापक तैयारी की थी। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने मस्जिदों पर जाकर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया और नमाजियों को ईद की बधाई दी।

गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट द्वारा ईदगाहों और मस्जिदों पर सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त किए गए। पुलिस कमिश्नर श्रीमती लक्ष्मी सिंह ने डीसीपी ग्रेटर नोएडा साद मियां खान के साथ संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा किया और मौके पर मौजूद अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। पुलिस कमिश्नर ने मिश्रित आबादी क्षेत्र में भी दौरा किया। त्योहार के दौरान जिले में 44 ईदगाह,178 मस्जिदें और 26 संवेदनशील स्थल चिन्हित किए गए।

इन स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था के लिए लगाए गए बल में 6 डीसीपी,7 एडीसीपी,14 एसीपी,27 थानाध्यक्ष,748 एसआई,110 महिला एसआई,1,400 मुख्य आरक्षी व आरक्षी,360 महिला आरक्षी,4 कंपनियां पीएसी,6 टीआई,37 टीएसआई, 400 से अधिक ट्रैफिक पुलिसकर्मी शामिल है।

ड्रोन और सीसीटीवी कैमरों की मदद से भीड़ और गतिविधियों की निगरानी की जा रही है। सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के लिए भी टीमें सक्रिय रहीं।

अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था राजीव नारायण मिश्रा ने डीसीपी नोएडा जोन यमुन प्रसाद के साथ सेक्टर-8 और अन्य संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा किया। साथ ही स्थानीय अधिकारियों को लगातार क्षेत्र में गश्त करने और संवेदनशीलता बनाए रखने के निर्देश दिए गए।

प्रधानमंत्री ने ईद-उल-अज़हा की शुभकामनाएं दीं

प्रधानमंत्री ने देशवासियों को ईद की बधाई दी है। पीएम मोदी ने ट्वीट किया, 'यह अवसर सद्भाव को प्रेरित करे और हमारे समाज में शांति के ताने-बाने को मजबूत करे। सभी के अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करता हूं।'

घर में घुसकर दंबगों ने की मारपीट

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना जेवर क्षेत्र के बुंदेलखंड कस्बे में रहने वाले एक व्यक्ति के घर में कुछ लोग जबरन घुस आए और परिजनों के साथ मारपीट की परिजनों को बचाने के लिए जब पड़ोसी पहुंचे तो आरोपियों ने उन्हें भी मारपीट कर घायल कर दिया और जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए।

मोहल्ला बुंदेलखंड निवासी गोपाल ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 5 जून की रात्रि को वह अपने परिजनों के साथ घर में सोए हुए थे। इस दौरान मोहल्ला रावल पट्टी के रहने वाले समीर समर अपने कुछ अन्य अज्ञात साथियों के साथ जबरन उनके घर में घुस आए और गाली गलौज करने लगे। उन्होंने जब गाली गलौज का विरोध किया तो आरोपियों ने लाठी डंडों से उसे पर हमला कर दिया। झगड़े की आवाज सुनकर उसकी मां प्रेमा दौड़कर बचाने के लिए **(शेष-4 पर)**

ट्रक चालक ने बाइक सवार को रौंदा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बादलपुर क्षेत्र के हरिश्चंद्र के बाग के पास तेज गति में आ रहे ट्रक ने बाइक सवार दो युवकों को टक्कर मार दी इस हादसे में एक युवक की मौत हो गई जबकि दूसरे की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया।

सेन विहार क्रॉसिंग्स रिपब्लिक निवासी आदित्य उर्फ आदित्य गोयल अपने दोस्त काव्या राणा के साथ शुक्रवार की सुबह अपनी बाइक से चिटहेड़ा जा रहा था। जैसे ही उनकी बाइक जीटी रोड पर हरिश्चंद्र के बाग के पास पहुंची तो तेज गति में आ रहे ट्रक चालक ने बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार आदित्य गोयल व काव्या राणा गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। घटनास्थल पर मौजूद अमित कुमार व अन्य लोगों ने दोनों को मणिपाल अस्पताल पहुंचाया जहां डॉक्टरों ने आदित्य उर्फ आदित्य गोयल को मृत घोषित कर दिया। अस्पताल में भर्ती काव्या राणा की हालत गंभीर बनी हुई है। इस संबंध में मृतक के पिता रामबाबू ने थाना बादलपुर में ट्रक चालक सफायत अली के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

गुणवत्ता के साथ समय पर बनेंगे सरकारी भवन : वाईपी सिंह

नोएडा (चेतना मंच)। यूपी स्टेट कंस्ट्रशन एंड इंफ्रास्ट्रचर डवलपमेंट कॉपोर्रेशन लि। (यूपी सिडको) के अध्यक्ष व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री वाईपी सिंह ने कहा है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का स्पष्ट निर्देश है कि प्रदेश में चल रहे सभी प्रोजेक्ट गुणवत्ता के साथ समय पर पूरे किए जाएं। यूपी सिडको के अध्यक्ष वाई पी सिंह ने आज विद्युत गेस्ट हाउस में समाज कल्याण विभाग व अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक के बाद उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए यह बात कही।

उन्होंने बताया कि जनपद में उपनिबंधन विभाग की बिल्डिंग तथा विद्यालयों की छात्रावास तथा विद्यालय भवन की प्रगति के बारे में अधिकारियों के साथ समीक्षा की गई तथा उन्हें तेजी से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में यूपी सिडको ने करीब 75 करोड रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित किया है। **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

महिला से अभद्र भाषा बोलने वाले भाजपा मंडल उपाध्यक्ष पर गिरी गाज

नोएडा (चेतना मंच)। श्यामा प्रसाद मुखर्जी मंडल के उपाध्यक्ष वाई ।पी। गुप्ता को एक महिला को फोन पर अभद्र व आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग करने पर उन्हें पद से मुक्त कर दिया गया तथा कारण बताओं नोटिस जारी किया गया है।

यह नोटिस भाजपा नोएडा महानगर के अध्यक्ष महेश चौहान ने क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया की सहमति के बाद जारी किया है।

आरोप है कि वाई ।पी। गुप्ता जो मंडल उपाध्यक्ष के अलावा सेक्टर 78 स्थित महागुन मॉडर्न सोसाइटी के ए ओ ए के सचिव हैं। उन्होंने समिति की एक बुजुर्ग परिवार की महिला को फोन करके उन्होंने अभद्रता तथा अमर्यादित भाषा का प्रयोग किया। जिसकी शिकायत मिलने पर उनको मंडल उपाध्यक्ष पद से मुक्त कर दिया गया तथा कारण बताओं नोटिस जारी कर जवाब भी तलब किया गया है।

उधर वाई ।पी। गुप्ता का कहना है कि जिस महिला से अभद्र भाषा बोलने का आरोप लग रहा है। उन्होंने उनके पति को फोन किया था लेकिन वह फोन उनकी पत्नी ने उठा लिया। उनका आरोप है कि महिला के पति सुधीर ने उनको सोशल मीडिया पर जाति सूचक गालियां दी तथा उन पर तरह-तरह के अनर्गल आरोप लगाए तथा उन पर हमला करने का भी प्रयास किया। इसी संबंध में वह उनके पति से बात करना चाहते थे लेकिन वह फोन धोखे से उनकी पत्नी ने उठा लिया।

विवाहिता का मनचले युवक ने जीना किया दुश्वार

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। शादीशुदा महिला को युवक से बात करना खासा महंगा पड़ा युवक ने महिला के अश्लील फोटो को सोशल साइट पर वायरल कर दिया। महिला ने जब इस बात का विरोध किया तो युवक ने उसे जान से मारने की धमकी दी पीड़िता ने आरोपी युवक के खिलाफ थाना बिसरख में मुकदमा दर्ज कराया है।

पुराना हैबतपुर में रहने वाली पूजा (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि पिछले एक माह से उसके अंकित नामक युवक से मोबाइल फोन पर बातचीत हो रही थी इस दौरान अंकित ने उसके अश्लील फोटो खींच लिए अश्लील फोटो खींचने के बाद अंकित अलग-अलग नंबरों से उन फोटो को उसके तथा उसके पति के व्हाट्सएप पर भेज रहा है इसके अलावा अंकित फेसबुक इंस्टाग्राम पर अश्लील फोटो की स्टोरी लगाकर उसे बदनाम कर रहा है उसने इस बारे में जब अंकित से बात की तो आरोपी ने उसे धमकी दी पीड़िता के मुताबिक युवक की इस करतूत से उसका घर व समाज में जीना दूभर हो गया है। पुलिस का कहना है कि पीड़िता की शिकायत पर आप युवक के खिलाफ नाम तक मुकदमा दर्ज किया गया है पुलिस आरोपी युवक की तलाश कर रही है।

पत्नी पर आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप

नोएडा (चेतना मंच)। युवक द्वारा जहर खाकर आत्महत्या किए जाने के मामले में उसकी पत्नी के खिलाफ थाना सेक्टर 49 में मुकदमा दर्ज कर गया है। मृतक के बहनोंई द्वारा यह मुकदमा दर्ज कराया गया है।

मूल रूप से मैनपुरी का रहने वाला सत्यम सिंह चौहान अपनी पत्नी खुशबू के साथ होशियापुर गांव में रह रहा था। 28 अप्रैल को सत्यम सिंह चौहान ने जहरीला पदार्थ खा लिया था। सत्यम के बहनोई धर्मेन्द्र सिंह ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि हालत बिगड़ने पर सत्यम सिंह चौहान ने अपनी बहन लक्ष्मी को फोन कर बताया कि उसकी पत्नी खुशबू ने उसे जहरीला पदार्थ खाने के लिए मजबूर किया था। जहरीले पदार्थ को खुशबू कहीं से खरीद कर लाई थी। गंभीर हालत में सत्यम सिंह चौहान को होशियारपुर स्थित शिवालिक अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जानकारी मिलने पर सत्यम के माता-पिता भी नोएडा आ गए थे। 29 अप्रैल को हालत बिगड़ने पर सत्यम सिंह चौहान को मेट्रो अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के बहनोई धर्मेंद्र सिंह ने इस मामले में खुशबू पर आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। धर्मेंद्र सिंह का आरोप है कि सत्यम सिंह चौहान की पत्नी खुशबू ने उसे इस कदर प्रताड़ित किया कि उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली पुलिस ने शिकायत के आधार पर खुशबू के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है और जांच पड़ताल कर रही है।

सोसायटी के जनरेटर से पीसीबी कार्ड चोरी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बिसरख क्षेत्र के अजनारा होम सोसाइटी में लगे जनरेटर से चोरों ने पीसीबी कार्ड चोरी कर लिया। सोसाइटी निवासी की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है और जांच कर रही है।

सेक्टर 16 बी स्थित अजनारा होम्स सोसायटी में रहने वाले राजेंद्र कुमारिया ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 17 मई की सुबह मेंटेनेंस कर्मचारियों डीजी ऑपरेटर दिनेश पंडित ने जांच के दौरान पाया कि जनरेटर का मुख्य उपकरण पीसीबी कार्ड गायब है इस संबंध में जब रात वाले डीजे ऑपरेटर से पूछा गया तो उसने बताया कि रात के समय जनरेटर में पीसीबी उपकरण लगा हुआ था। सुबह के समय किसी व्यक्ति ने जनरेटर से पीसीबी कार्ड चोरी किया है उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। राजेंद्र कुमारिया की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज कर लिया है।

भंडारा व शरबत वितरण में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग पर होगा सख्त एक्शन

आयोजन के पूर्व प्राधिकरण की अनुमति अनिवार्य : एसपी सिंह

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा में नोएडा प्राधिकरण की अनुमति के बिना सार्वजनिक स्थलों तथा सड़कों के किनारे भंडारा, शरबत वितरण आदि कार्यक्रम किये तो खैर नहीं। आपके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

नोएडा प्राधिकरण के जन स्वास्थ्य विभाग के महाप्रबंधक एसपी सिंह ने बताया कि नोएडा में सार्वजनिक स्थलों तथा सड़कों के किनारे भंडारा, प्याऊ, शरबत वितरण आदि कार्यक्रमों में प्लास्टिक सामग्री का उपयोग किया जाता है। इससे सड़कों पर गंदगी फैलती है तथा एनजीटी के नियमों की भी खुलेआम धज्जियां उड़ाई जाती है। इसी को देखते हुए नोएडा प्राधिकरण ने ऐसे कार्यक्रमों में सिंगल यूज प्लास्टिक **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

दलित प्रेरणास्थल पर सड़क चौड़ीकरण के लिए मिली एनओसी

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा ग्रेटरनोएडा एक्सप्रेस वे पर महामाया फ्लाइओवर से डीएनडी लूप तक की रोड को चौड़ा किया जाएगा। इससे एक्सप्रेस वे के जरिए दिल्ली जाने वाले वाहन चालकों को जाम नहीं मिलेगा।

जारी किया जाएगा टेंडर

सड़क चौड़ा करने के लिए प्राधिकरण ने 26 सितंबर 2024 को उप्र शासन की स्मारकों, संग्रहालयों, संस्थाओं, पार्क व उपवन आदि की प्रबंधन, सुरक्षा और अनुरक्षण समिति से एनओसी मांगी थी। ये एनओसी प्राधिकरण को मिल गई है। ऐसे में अब प्राधिकरण सड़क चौड़ीकरण के लिए टेंडर जारी कर सकता है।

वहीं आज दलित प्रेरणास्थल के सामने पाइप लाइन को ठीक करने का काम शुरू कर दिया गया। नोएडा ट्रैफिक पुलिस द्वारा बर्ड फीडिंग पॉइंट (डायवर्जन प्वाइंट)पर यातायात व्यवस्था का निरीक्षण किया गया एवं उपस्थित यातायात पुलिस कर्मियों को यातायात के सुगम संचालन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

दलित प्रेरणास्थल के पास जल की पाइप लाइन क्षतिग्रस्त हो गई है। इसे ठीक करने का काम शुरू कर दिया गया है।

बता दें कि पीक आवर्स में ट्रैफिक भार ज्यादा होने से यहां लोगो को काफी दिक्कत होती है। ऐसे में निर्णय लिया गया कि सेक्टर-95 राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल के सामने सड़क को चौड़ा किया जाए। लेकिन बिना एनओसी के ये नहीं हो सकता था। अब एनओसी मिल गई है। जिसके बाद सड़क चौड़ी करण काम जल्द शुरू हो जाएगा। प्राधिकरण ने बताया कि इसके लिए जो स्टडी की गई है।

सेक्टर-95 में 600 मीटर लंबाई में बनी हुई 1 मीटर रोड साइड पटरी और 1।4 मीटर चौड़ा छोटा फुटपाथ व रेलिंग के अलावा 3।1 मीटर चौड़ा पेव्ड टाइल सर्फेस को हटाकर कुल 5।5 मीटर चौड़ी सर्वियस लेन बनाई जाएगी। जिससे यहां लगने वाले जाम से लोगों को राहत मिलेगी। ऐसे में सड़क रोड कैरिजवे 45 मीटर हो जाएगी।

नशे में दी थी दिल्ली की सीएम को धमकी

गाजियाबाद। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को धमकी देने वाले शख्स को गाजियाबाद और दिल्ली पुलिस की संयुक्त टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। कोतवाली इलाके से गिरफ्तारी हुई है। इसके बाद उसे दिल्ली पुलिस को सौंप दिया गया। फिलहाल दिल्ली पुलिस आरोपी को कस्टडी में लेकर पूछताछ कर रही है।

प्रारंभिक जांच में पता चला है कि आरोपी श्लोक त्रिपाठी ने पत्नी से विवाद और शराब के नशे में कॉल करके धमकी दी थी। जिस सिम से धमकी दी गई थी, वह गोरखपुर के पते पर रजिस्टर्ड था। जांच में जुटी पुलिस को धमकी भरी कॉल करने वाले अज्ञात कॉलर की लोकेशन कोतवाली थाना क्षेत्र के पंचवटी इलाके में ट्रेस हुई थी। जिसके बाद कोतवाली इलाके से धमकी भरा फोन करने वाले श्लोक त्रिपाठी को गिरफ्तार कर लिया गया। जिस सिम से धमकी दी गई, वह आरोपी के किसी रिश्तेदार के नाम पर रजिस्टर्ड है। पुलिस ने बताया कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को जान से मारने की धमकी दी गई थी। **(शेष पृष्ठ-4 पर)**

न्यायपालिका की साख

किसी भी लोकतंत्र में न्यायपालिका की साख निर्विवाद रूप से कायम रहनी चाहिए। कामकाज में पारदर्शिता व शुचिता नजर आना संवैधानिक संस्था के लिये अनिवार्य शर्त है। न्यायपालिका की जिन कवायदों को लेकर अंगुलियां उठ सकती हैं, उनको संबोधित करके मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने एक सराहनीय पहल की है। उनका सेवानिवृत्ति के बाद सरकार से कोई पद न लेने का संकल्प संस्थागत ईमानदारी व विश्वसनीयता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम कहा जाएगा। निस्संदेह, उनके और कई सहयोगियों द्वारा दर्शायी गई यह प्रतिबद्धता न्यायपालिका की विश्वसनीयता और इसे स्वतंत्र बनाये रखने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। सीजेआई गवई ने यही साबित करने का प्रयास किया है कि न्यायाधीशों द्वारा सेवानिवृत्ति के तुरंत बाद सरकारी पद लेना या चुनाव लड़ने के लिये इस्तीफा देना, संवेदनशील नैतिक चिंताएं पैदा करता है। यह भी कि ये प्रवृत्तियां सार्वजनिक जांच को आमंत्रित करती हैं। निस्संदेह, हितों के टकराव या पक्षपात की कोई भी धारणा केवल विश्वास की कमी को ही बढ़ाती है। विश्वास किया जाना चाहिए कि इस मुद्दे पर सीजेआई का साहसिक रुख नैतिक नेतृत्व का एक नया मानक स्थापित करेगा-जिसका अक्षरशः और ईमानदारी की भावना से पालन किया जाएगा। दरअसल, मुख्य न्यायाधीश ने टिप्पणी की है कि न्यायपालिका के भीतर कदाचार के उदाहरण पूरी व्यवस्था के प्रति विश्वास को चोट पहुंचा सकते हैं। इस विश्वास को फिर से बनाने का रास्ता त्वरित, निर्णायक और पारदर्शी कार्रवाई में निहित है। इसमें दो राय नहीं कि न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा से जुड़ा कैश-इन-रेजिडेंस का विवाद न्यायपालिका के साथ-साथ कार्यपालिका और विधायिका के लिये कसौटी पर परखने का मामला है। चर्चा है कि आगामी मानसून सत्र में दिल्ली उच्च न्यायालय के एक विवादित पूर्व न्यायाधीश के खिलाफ महाभियोग का प्रस्ताव लाया जा सकता है। वहीं कॉलेजियम प्रणाली की बढ़ती आलोचना के बीच सीजेआई गवई का यह कथन कि न्यायिक स्वतंत्रता की कीमत पर कोई समाधान नहीं आना चाहिए, सही है। हालांकि, न्यायाधीशों की नियुक्ति कैसे की जाती है, यह एक अनसुलझा विवादास्पद मुद्दा बना हुआ है। गाहे-बगाहे अदृश्य न्यायिक भ्रष्टाचार पर भी गंभीर चिंता जतायी जाती रही है। पिछले दिनों पूर्व सीजेआई संजीव खन्ना का सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की संपत्ति सार्वजनिक करने का कदम सराहनीय था। लेकिन अभी भी इस दिशा में बहुत किया जाना बाकी है। बड़े पैमाने पर लंबित मामलों के मूल में प्रणालीगत विसंगतियां होने की बात कही जाती है। लेकिन हकीकत यह भी है कि राजनीतिक नफे-नुकसान के समीकरणों को साधने के लिये सरकारों ने भी तमाम संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर करने का प्रयास भी किया है। इसके बावजूद संस्थाओं के भीतर से उभरते शुचिता के संकल्प जन विश्वास को मजबूती देते हैं। ऐसे में मुख्य न्यायाधीश की साफगोई और विसंगतियों को दूर करने का संकल्प न्यायिक व्यवस्था में जनता के भरोसे को बढ़ाने वाला ही कहा जाएगा। हाल के वर्षों में कुछ शीर्ष न्यायिक संस्थाओं के फैसलों के राजनीतिक निहितार्थ को लेकर सार्वजनिक विमर्श में चर्चाएं होती रही हैं। यही वजह है कि सेवामुक्ति के बाद लाभ के पद स्वीकारने और इस्तीफा देकर चुनाव लड़ने के फैसले को नैतिकता की कसौटी पर कसा जाता रहा है। निर्विवाद रूप से किसी राजनीतिक दबाव से मुक्त होकर तथा किसी प्रलोभन को ठुकराकर ही न्याय की साख को बनाया जा सकता है। तभी सही अर्थों में न्यायिक दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन किया जा सकता है। निस्संदेह, न्याय की विश्वसनीयता के लिये न्यायाधीशों का व्यक्तिगत व्यवहार खास मायने रखता है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि सत्ता की निरंकुशता पर लगाम लगाने और संविधान की रक्षा करने का बड़ा दायित्व भी न्यायपालिका के जिम्मे है। देश में तमाम संस्थाओं और व्यवस्था से निराश व्यक्ति अंतिम आस के रूप में न्यायिक व्यवस्था की ओर देखता है। जनता को भरोसा रहता है कि सत्ता की मनमानी पर न्यायिक व्यवस्था ही नकेल कस सकती है। भले ही सत्ताधीश इसे न्यायिक सक्रियता का नाम क्यों न दें। ऐसे में जरूरी है कि हालिया घोषणाएं जमीनी हकीकत भी बनें। वहीं दूसरी ओर वीरवार को मुख्य न्यायाधीश ने तार्किक टिप्पणी की, कि यदि प्रौद्योगिकी को कमान सौंपी गई तो न्यायपालिका के प्रति विश्वास कमजोर होगा। उनका मानना है कि तकनीकी दौड़ में हमें मानवता को नहीं भूलना चाहिए।

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि राजा को तीन दिन युग के समान बीते। उसकी बुद्धि कपटी मुनि के चरणों में लगी रही। निश्चित समय जानकर पुरोहित (बना हुआ राक्षस) आया और राजा के साथ की हुई गुप्त सलाह के अनुसार (उसने अपने) सब विचार उसे समझाकर कह दिए॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

दो0-नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत॥

(संकेत के अनुसार) गुरु को (उस रूप में) पहचानकर राजा प्रसन्न हुआ। भ्रमवश उसे चेत न रहा (कि यह तापस मुनि है या कालकेतु राक्षस)। उसने तुरंत एक लाख उत्तम ब्राह्मणों को कुटुम्ब सहित निमंत्रण दे दिया॥

उपरोहित जेवनार बनाई। छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई॥
मायामय तेहिं कीन्हि रसोई। बिंजन बहु गनि सकइ न कोई॥

पुरोहित ने छह रस और चार प्रकार के भोजन, जैसा कि वेदों में वर्णन है, बनाए। उसने मायामयी रसोई तैयार की और इतने व्यंजन बनाए, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता॥

बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा॥
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए। पद पखारि सादर बैठाए॥

अनेक प्रकार के पशुओं का मांस पकाया और उसमें उस दुष्ट ने ब्राह्मणों का मांस मिला दिया। सब ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया और चरण धोकर आदर सहित बैठाया॥

(क्रमशः...)

बेंगलुरु में अमानवीय चेहरे का बेनकाब होना

बढ़ते तापमान रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की शानदार जीत के बाद आयोज्य जश्न के मातम, हाहाकार एवं दर्दनाक मंजर ने राज्य की सुरक्षा व्यवस्था की पोल ही नहीं खोली बल्कि सत्ता एवं खेल व्यवस्थाओं के अमानवीय चेहरे को भी बेनकाब किया है। आरसीबी विक्ट्री परेड के दौरान चिन्नास्वामी स्टेडियम के पास अचानक मची भगदड़ में 11 लोगों की मौत हो गई जबकि 50 गंभीर रूप से घायल हुए हैं। भगदड़ में लोगों की जो दुखद मृत्यु हुई, यह राज्य प्रायोजित एवं प्रोत्साहित हत्या है। पुलिस का बंदोबस्त कहां था? चीख, पुकार और दर्द और क्रिकेट सितारों को देखने की दीवानगी एक ऐसा दर्दनाक एवं खौफनाक वाकया है जो सुदीर्घ काल तक पीड़ित और परेशान करेगा। प्रशासन की लापरवाही, अत्यधिक भीड़, निकासी मार्गों की कमी और अव्यवस्थित प्रबंधन ने इस त्रासदी को जन्म दिया। यह घटना कोई अपवाद नहीं है, बल्कि हाल के वर्षों में दुनिया भर में सामने आई ऐसी घटनाओं की कड़ी का नया खौफनाक मामला है, जहाँ भीड़ नियंत्रण में चूक एवं प्रशासन एवं सत्ता का जनता के प्रति उदासीनता का गंभीर परिणाम एवं त्रासदी का ज्वलंत उदाहरण है।

क्रिकेट की दुनिया के सबसे बड़े वार्षिक उत्सव इंडियन प्रीमियर लीग के फाइनल मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 18वें संस्करण में आईपीएल खिताब जीत लिया। इस कामयाबी से आईपीएल से विदाई ले रहे विराट कोहली के प्रति जन-उत्साह उमड़ा। लेकिन इस जीत के जश्न की चमक में प्रशंसकों की चीखें एवं आहें का होना और उसे खिलाडियों एवं राजनेताओं द्वारा नजरअंदाज करना, अमानवीयता की चरम पराकाष्ठा है। दुर्घटना होने एवं आम लोगों की मौतें हो जाने के बावजूद जश्न जारी रहना, दुखद एवं शर्मनाक है। प्रशंसकों की अहमियत को कमतर आंकने के इस दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम ने न केवल राजनेताओं को बल्कि खिलाड़ियों को भी दागी किया है। घटना ने एक बार फिर हमारे अवैज्ञानिक व लाठी भांजने वाले भीड़ प्रबंधन की ही पोल खोली है। इस जीत के जश्न में हिस्सा लेने आई भीड़ का एक लाख तक होने का अनुमान था। लेकिन लंबे अंतराल के बाद मिली जीत ने लोगों के उत्साह को इस स्तर तक पहुंचा दिया कि स्टेडियम के आसपास तीन लाख से अधिक लोगों की भीड़ जमा हो गई। खुद कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का मौत की खबरें मिलने के बावजूद खिलाडियों के साथ जश्न मनाने में जुटा रहना उनकी प्रचार भूख का भौंडा उदाहरण है। जब मौत के बाद वहां पसरा मातम देखकर सब स्तब्ध थे तो सिद्धारमैया क्यों अपने पद की गरिमा एवं जिम्मेदारी को धूमिल कर रहे थे? सोचिए लोगों की मौत के बाद अगर एक मिनट भी जश्न मना, तालियां बजीं, ठहाके लगे, फ्लाइंग किस दिए गए तो इससे ज्यादा अमानवीयता और निर्दयता क्या हो सकती है? जब खुद सरकार एक जश्न का मातम में बदलने का नेतृत्व करेगी तो आम लोगों का कांप उठना स्वाभाविक है।

बहरहाल, आईपीएल का आयोजन लगातार नई ऊंचाइयों को छूता हुआ व्यावसायिक क्रिकेट को नई ऊंचाइयां देने में जरूर सफल रहा है। फटाफट क्रिकेट के दुनिया के सबसे बड़े उत्सव में भारत के दो सर्वकालिक महान खिलाड़ियों विराट कोहली व एमएस धोनी की प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी। अंततः विराट कोहली का आईपीएल खिताब जीतने का लंबा इंतजार इस जीत के साथ खत्म हुआ। लेकिन धोनी पांच बार की विजेता चेन्नई सुपरकिंग को जीत का खिताब दिलाने से चूक गए। एक तरह से आईपीएल क्रिकेट से कोहली की यह शानदार विदाई साबित हुई। वे इस गरिमामय विदाई के हकदार भी थे। उनके करोड़ों प्रशंसकों की कतारे देख कर राजनेता भी उनकी साथ मंच सांझा करने को उत्सुक दिखे, कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, अन्य मंत्री एवं प्रशासनिक अधिकारी भी इसी फिराक में अपनी जिम्मेदारियों को भूल जश्न मनाते रहे और आमजनता अव्यवस्थाओं के कारण मौत में समाती रही। यह ऐसी दुखद घटना है जो अपनी निर्दयता एवं क्रूरता के लिये लम्बे समय तक कौंधती रहेगी। सिद्धारमैया के इस घटना की तुलना प्रयागराज कुंभ में हुए हादसे के करना उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता को ही दर्शा रही है।

क्रिकेट की दुनिया के सबसे बड़े वार्षिक उत्सव इंडियन प्रीमियर लीग के फाइनल मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 18वें संस्करण में आईपीएल खिताब जीत लिया। इस कामयाबी से आईपीएल से विदाई ले रहे विराट कोहली के प्रति जन-उत्साह उमड़ा।

भारत में भीड़ से जुड़े हादसे अनेक आम लोगों के जीवन का ग्रास बनते रहे हैं। धार्मिक आयोजनों हो या खेल प्रतियोगिता, राजनीतिक रैली हो या सांस्कृतिक उत्सव लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं, जहाँ भीड़ प्रबंधन की मामूली चूक भयावह त्रासदी में बदलते हुए देखी जाती रही है। उदाहरण के लिये, वर्ष 2022 में दक्षिण कोरिया के इटावन हैलोवीन समारोह में अत्यधिक भीड़ के कारण 150 से अधिक लोगों की जान चली गई थी। इसी तरह, वर्ष 2015 में मक्का में हज के दौरान मची भगदड़ में सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। वर्ष 2013 में मध्य प्रदेश के रत्नागढ़ मंदिर में ढाँचागत कमियों से प्रेरित भगदड़ के कारण 115 लोगों की मौत हो गई थी। हालही में महाकुंभ के दौरान नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन एवं प्रयागराज में हुए हादसे में भी अनेकों लोगों की जान गयी। आग, भूकंप, या आतंकी हमलों जैसी आपातकालीन स्थितियाँ में भी भीड़ प्रबंधन की पौल खुलती रही है। आखिर दुनिया के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश में हम भीड़ प्रबंधन को लेकर इतने उदासीन क्यों है? बड़े आयोजनों-भीड़ के आयोजनों में भीड़ बाधाओं को दूर करने के लिए, भीड़ प्रबंधन के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार, सुरक्षाकर्मियों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करना, जन जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करना अब नितान्त आवश्यक है।

रेलवे स्टेशन, मंदिर और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ को संभालने के लिए पर्याप्त जगह और रास्ते नहीं हैं। कुछ स्थानों पर निकास मार्ग सीमित हैं या अनुपयुक्त हैं, जो भगदड़ का खतरा बढ़ाते हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए पर्याप्त प्रशिक्षित एवं दक्ष सुरक्षाकर्मी नहीं हैं, जिससे सुरक्षा चूक होने की संभावना बढ़ जाती है। भीड़ प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीकों, जैसे कि एआई आधारित निगरानी और ड्रोन कैमरे का उपयोग सीमित है। लोगों को आपातकालीन निकास मार्गों, भीड़ नियंत्रण नियमों, और सुरक्षा उपायों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है। गलत सूचना या अचानक दहशत से भीड़ अनियंत्रित हो सकती है और भगदड़ मच सकती है। भीड़ का व्यवहार कई बार अनियंत्रित हो जाता है, खासकर धार्मिक, खेल एवं सिनेमा आयोजनों में, जहां लोग भावनाओं में बहकर आगे निकलने की होड़ में लग जाते हैं। कई बार आयोजनकर्ताओं और पुलिस के बीच समन्वय की कमी होती है, जिससे सुरक्षा चूक हो सकती है। भीड़ प्रबंधन केवल विधि-व्यवस्था बनाए रखने का विषय नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन की सुरक्षा, सार्वजनिक स्थानों की संरचना और आपातकालीन स्थितियों से निपटने की रणनीतियों से गहनता से संबद्ध है। दुर्भाग्यवश, कई बार आयोजकों और प्रशासनिक एजेंसियों द्वारा पर्याप्त सुरक्षा उपाय नहीं किये जाते, जिससे जानमाल की हानि होती है। इस परिदृश्य में, बड़े आयोजनों में भीड़ प्रबंधन की मौजूदा स्थिति, उससे जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ, हालिया घटनाओं से मिले सबक और प्रभावी समाधानों की चर्चा करना बेहद प्रासंगिक होगा, ताकि भविष्य में ऐसी त्रासदियों से बचा जा सके।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में धार्मिक उत्सव, खेल आयोजनों और राजनीतिक रैलियों में लाखों लोग जुटते हैं। ऐसे आयोजनों के लिये पुलिस, होम गार्ड, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और अन्य सुरक्षा एजेंसियों को तैनात किया जाता है। विश्व के विभिन्न विकसित देशों में भीड़ प्रबंधन के लिये अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है। जापान जैसे देशों में रेलवे स्टेशनों और सार्वजनिक स्थानों पर अत्यधिक भीड़ के प्रबंधन के लिये ऑटोमेटेड एंट्री और एग्जिट सिस्टम स्थापित किये गए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय देशों में स्टेडियमों, एयरपोर्ट्स एवं धार्मिक स्थलों पर भीड़ नियंत्रण के लिये एआई आधारित कैमरे, आपातकालीन अलर्ट सिस्टम और प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी मौजूद रहते हैं। हालाँकि भारत में बड़े आयोजनों के लिये प्रशासनिक तैयारियाँ की जाती हैं, फिर भी समय-समय पर कई कमियाँ उजागर होती रही हैं। लेकिन आरसीबी के चिन्नास्वामी स्टेडियम के जश्न के दौरान खामियां ही खामियां देखने को मिली। ऐसे बड़े आयोजनों में भीड़ प्रबंधन कोई आसान कार्य नहीं है। लाखों लोगों को नियंत्रित करने के लिये ठोस रणनीति, प्रशासनिक कौशल और अत्याधुनिक तकनीक की आवश्यकता होती है, जिसका इस आयोजन में सर्वथा अभाव रहा। आखिर इतने लोगों की मौत की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए और दोषी लोगों को कड़ा दण्ड दिया जाना चाहिए।

- ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

दूरगामी सोच का परिणाम है वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान

जल है तो कल है कि चुनौती के बीच राजस्थान की भजन लाल सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में मानसून से पूर्व 5 जून से 20 जून तक वंदे गंगा जल संरक्षण- जन अभियान इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, दादरा-नगर हवेली और दमन दीव देष के ऐसे राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश है जहां भूजल की निकासी भूजल के पुनर्भरण से कहीं अधिक हो रही है। अगर राजस्थान ही की बात करें और वह भी शुद्ध पेयजल की बात की जाए तो पीने योग्य पानी और उसकी उपलब्धता में 30 फीसदी का अंतर है। 30 प्रतिशत का अंतर कोई छोटा मोटा अंतर नहीं है ऐसे में इसे भलीभांति समझा जा सकता है कि राज्य सरकार को नागरिकों के लिए पीने के शुद्ध पानी की उपलब्धता बनाये रखने की चुनौती से कैसे दो-चार होना पड़ता होगा। वास्तव में यह गंभीर समस्या है। समूचे विश्व में पानी की उपलब्धता का संकट है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 1950 में जहां प्रतिव्यक्ति सालाना 5200 घनमीटर पानी की उपलब्धता थी वह 2024 आते आते 1401 घनमीटर रह गई है और यदि विशेषज्ञों की माने तो 2050 तक यह उपलब्धता 1191 घनमीटर ही रह जाने की संभावना हो गई है। यही कारण है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों कहा कि हमें पानी के उपयोग के संदर्भ में कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनः चक्रित करने की नीति पर चलना होगा। देश में जल के पुनर्भरण में लगातार कमी आ रही है। प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में आज भारत 182 वें स्थान पर आ गया है। भूजल की उपलब्धता को देखा जाए तो 1950 से 2024 के दौरान 73 प्रतिशत की कमी आ गई है। दिल्ली, चैन्नई, पुणे, हैदराबाद, मुंबई सहित देश के अनेक छोटे बड़े शहर पेयजल की गंभीर समस्या से जुझ रहे हैं।

विश्वव्यापी जल संकट को देखते हुए राजस्थान की भजन लाल सरकार की इस पहल को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। दरअसल देश में उपलब्ध भूजल का 87 प्रतिशत उपयोग खेती किसानी में होता है तो 11.7 प्रतिशत उपयोग घरेलू कार्यों और लगभग 2 प्रतिशत उपयोग ही औद्योगिक क्षेत्र में होता है। संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है। सीवेज के कारण पानी का अत्यधिक उपयोग, बरसाती जल का प्रोपर संग्रहण नहीं होना, जंगलों का कक्रिट के जंगलों में बदलना और पानी के अन्य कार्यों में भी अत्यधिक उपयोग से पानी का संकट दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनियमित बरसात और बरसाती चक्र में बदलाव को भी एक कारण माना जा सकता है। आज जितने पानी के पीने के लिए आवश्यकता होती है उससे कई गुणा अधिक पानी फ्लस करने, वाहनों की धुलाई, पौधों के रखरखाव व अन्य कार्यों में होने लगा है। सीमेंट, लोहा, जस्ता और अब एमसेंड आदि उद्योगों के लिए भी अधिक पानी की आवश्यकता होने लगी है।

एक समय था जब सावन भादों में बरसात की झड़ी लगती थी और कई दिनों तक सूर्य देवता के दर्शन नहीं होते थे तो उस झड़ी का पानी सीधे जमीन में जाता था और वह प्राकृतिक वाटर हार्वेस्टिंग का सिस्टम होता था। सड़कों के साथ साथ ढ़लान क्षेत्र होता था और वहां एकत्रित पानी क्षेत्र में जल स्तर बढ़ाने के साथ ही पशुओं के पीने के काम भी आ जाता था। राजस्थान में रेगिस्तानी इलाकों में टांके आदि परंपरागत जल संग्रहण के साधन होते थे आज हम इन्हें भूलते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि गिरते भूजल स्तर और जल संग्रहण को लेकर सरकार गंभीर ना हो। बल्कि कहना तो यह होगा कि सरकार अत्यधिक गंभीर होने के बावजूद जो परिणाम आने चाहिए वह प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसका एक प्रमुख कारण दूरगामी सोच के साथ नीति और क्रियान्वयन का ना होना भी है। सरकार द्वारा वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सरकार स्तर पर बड़े स्तर पर बनाने और निजी मल्टी स्टोरिज व सरकार गैरसरकारी संस्थानों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने पर जोर और बनाये जाने के बावजूद उनकी गुणवत्ता को लेकर सवाल इसलिए उठते रहते हैं कि ना तो रखरखाव पर ध्यान दिया जाता है और ना ही पानी के बहाव का पूरा ध्यान देने के कारण यह अपने उद्देश्यों पर खरे नहीं उतरे हैं।

ऐसा नहीं है कि इन हालातों से सरकार अनजान हो यहीं कारण है कि राजस्थान की भजन लाल सरकार ने मानसून के ठीक पहले पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से 20 जून तक समूचे प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर रही है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस अभियान में जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया है और स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक प्रमुख समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका की मुहिम पर रामगढ़ में श्रमदान में हिस्सा लेकर आमजन को संदेश दिया है। राज्य सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अभियान के दौरान जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल प्रदूषण में कमी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता, भूजल पुनर्भरण, व्यवहार परिवर्तन से बेहतर जल उपयोग और व्यापक स्तर पर पौधारोपण के हरियालो राजस्थान की तैयारी आरंभ की है। रामगढ़ राजस्थान की राजधानी जयपुर की किसी जमाने में पेयजल की उपलब्धता के लिए जीवन रेखा माना जाता था और 1982 के एशियाड़ की नौकायन प्रतियोगिता के बाद इसके बहाव क्षेत्र में अतिक्रमणों का जो ग्रहण लगा वह इसे सूखे मैदान में बदल कर रख दिया है। पिछले लंबे समय से रामगढ़ को पुनर्जीवित करने की मुहिम चल रही है लगता है सरकार ने यहां वैकल्पिक स्रोत से पानी लाने की जो योजना बनाई है और समग्र प्रयासों से परंपरागत पानी के अवरुद्ध रास्ते चलने लगते हैं तो रामगढ़ को नया जीवन मिल सकेगा। रामगढ़ तो एक उदाहरण मात्र है देश व प्रदेश में ऐसे हजारों की संख्या में जल संग्रहण स्रोत है जो अतिक्रमणों व शहरीकरण की भेंट चढ़ रहे हैं।

शहरीकरण के विस्तार के समय यदि परंपरागत जल बहाव क्षेत्रों से छेड़छाड़ नहीं की जाए तो हालात इतने अधिक नहीं बिगड़े पर पैसा कमाने का लालच हमारें आने वाली पीढ़ी के लिए संकट लाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने पाणी रो मान राखो-जीवण रो ध्यान राखो समयानुकूल संदेश दिया है। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि सभी मंत्रियों और प्रभारी सचिवों को इस कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्वयं मुख्यमंत्री श्रमदान कर रहे हैं। निश्चित रुप से इससे अवेयरनेस तो आयेगी ही जनभागीदारी भी बढ़ेगी। देश के सभी राज्यों में इस तरह के अभियान चलाये जाने चाहिए। भले ही आज कुछ राज्यों में पानी का संकट दिखाई नहीं दे रहा हो पर पानी की बचत और भूजल के संग्रहण के प्रति हमें गंभीर होना ही होगा।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राशिफल

ज्येष्ठ माह शुक्ल पक्ष द्वादशी — **(विक्रम संवत् 2082)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
आमदनी में वृद्धि होगी। कुटुंबों में वृद्धि होगी। शब्द-साधक की तरह व्यवहार करेंगे।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
सुकुमारता के प्रतीक बने रहेंगे। आकर्षण के केंद्र बने रहेंगे। शुभता के प्रतीक बने रहेंगे।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
खर्च की अधिकता रहेगी, हालांकि शुभ कार्यों में खर्च होगा। प्रेम-संतान की स्थिति मध्यम।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
शुभ समय। रुका हुआ धन वापस मिलेगा। आय के नवीन स्रोत बनेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगा। राजनीतिक लाभ होगा। व्यापारिक संतुलन बनेगा।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
भाग्य साथ देगा। रोजी-रोजगार में तरक्की होगी। यात्रा का योग बनेगा। धर्म-कर्म में हिस्सा लेंगे।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
चोट-चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
जीवनसाथी का सानिध्य मिलेगा। नौकरी चाकरी की स्थिति अच्छी होगी। स्वास्थ्य अच्छा। प्रेम-संतान अच्छा।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
शत्रु भी मित्रवत व्यवहार करेंगे। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। प्रेम-संतान की स्थिति अच्छी व व्यापार अच्छा रहेगा।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
संतान की स्थिति बहुत अच्छी है। प्रेम की स्थिति बहुत अच्छी है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी शुभ संकेत।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
भूमि, भवन व वाहन की खरीदारी के प्रबल योग बन रहे हैं। घर में कुछ उत्सव हो सकता है।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। अपनों का साथ होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम-संतान का साथ होगा।

भाजपा को भारी पड़ सकती है जिलाध्यक्ष की मनमानी व कार्यकर्ताओं की उपेक्षा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश नेतृत्व एक तरफ जहां उत्तर प्रदेश में होने वाले 2027 के विधानसभा चुनाव में तीसरी बार सरकार बनाने की कवायद में जुटा है। वहीं गौतमबुद्धनगर भारतीय जनता पार्टी का हाल बेहाल है ।

भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष एडवोकेट अभिषेक शर्मा मीडिया से लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं तक का फोन उठाना उचित नहीं समझते हैं। कई कार्यकर्ताओं ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि ना तो उन्हें कार्यक्रमों की जानकारी दी जाती है और ना ही उन्हें बुलाया जाता है। वहीं एक कार्यकर्ता ने बताया कि कई बार फोन करने पर भी जिला अध्यक्ष अभिषेक शर्मा ना तो फोन उठाते हैं और ना ही उसका जवाब देते हैं। इसका उदाहरण पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में साफ दिखाई दे रहा है। पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में दर्जन भर से अधिक कार्यकर्ता जुट नहीं पा रहे हैं।

मीडिया का भी फोन नहीं उठाते हैं भाजपा के जिलाध्यक्ष

वहीं मीडिया के लोगों का भी जिलाध्यक्ष फोन नहीं उठाते। कुछ कार्यकर्ता इस मनमानी एवं पार्टी को नुकसान पहुंचाने वाले व्यवहार की शिकायत प्रदेश एवं केंद्रीय शीर्ष नेतृत्व से करने का मन बना चुके हैं।

भाकियू अजगर का प्रतिनिधि मंडल मिला

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। खेल का मैदान स्टेडियम बच्चों की शारीरिक समस्याओं को लेकर खेल अधिकारी श्रीमती अनीता नागर से भाकियू अजगर का एक प्रतिनिधिमंडल कल मुलाकात किया।

मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष राजेश उपाध्याय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल भारतीय किसान यूनियन अजगर का उनके कार्यालय पर मिलने पहुंचे जिसमें उन्होंने भरोसा दिया कि आपकी कोई भी समस्या होगी उसका हम निस्तारण करवाएंगे बातचीत बड़े अच्छे ढंग से हुई उनका बहुत-बहुत धन्यवाद जो हमारी समस्याएं सुनी इसमें मुख्य रूप से शर्मा यादव राष्ट्रीय महासचिव भारतीय किसान यूनियन राजेश उपाध्याय जिला अध्यक्ष नीरज भाटी प्रदेश गजब भाटी प्रदेश सचिव सोनू तोमर दीपक बच्चा राजकुमार विनोद दयानंद बिजेंदर पुरुषोत्तम आदि लोग मौजूद रहे।

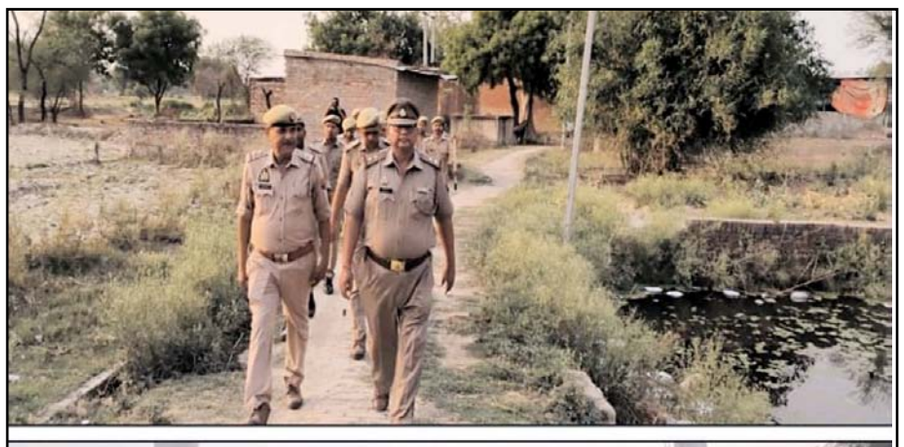

कस्बा दनकौर की ईदगाह पर ईद उल अजहा की नमाज शांतिपूर्ण संपन्न हुई। सुरक्षा और शांति व्यवस्था का जायजा लेते पुलिस के अधिकारी।

केन्द्र सरकार की 11 वर्ष पूर्ण होने पर कार्यक्रम आयोजित

भदोही। भाजपा के जिला अध्यक्ष दीपक मिश्रा के नेतृत्व एवं अध्यक्षता में विकसित भारत का अमृत कल एवं सेवा सुशासन और गरीब कल्याण की 11 वर्ष पूर्ण होने के संदर्भ में जिला कार्यालय पर महत्वपूर्ण कार्यशाला संपन्न हुई इस कार्यक्रम का संचालन इस कार्यक्रम के संयोजक अखिलेंद्र सिंह बघेल चिंटू ने किया बैठक के मुख्य अतिथि जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी खादी ग्राम उद्योग आयोग के सदस्य ने कहा आप सभी को अवगत हो कि केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के 11 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं।

मोदी सरकार के गौरवशाली कार्य दिवसों में उनकी उपलब्धियां की चर्चा को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए 9 जून से 21 जून तक प्रदेशव्यापी अभियान आरंभ कर ईसे जिला स्तर पर भी किया जाएगा केंद्र की सरकार की उपलब्धियां बताते हुए जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी ने कहा 2014 से उच्च शिक्षा में बदलाव हर साल एक नया आईआईटी और आईएम खुला है हर हफ्ते एक नए विश्वविद्यालय की स्थापना हर दिन एक नए कॉलेज का उद्घाटन भारत के एथलेटिक्स का परचम दुनिया में लहराया ओलंपिक में भारत 15 पदक 60 वर्षों में 20

पदक 1952 से 2012 2016-2024- ओलंपिक-2000-में अब तक का सर्वाधिक सहज रिकॉर्ड ऐसी तमाम उपलब्धियां जिला प्रभारी ने गिनाया जिला प्रभारी ने कार्यशाला में लोगों को बताया ईसी क्रम में जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी जिला कार्यालय पर एक पेड़ मां के नाम लगाकर पर्यावरण को भी सुरक्षित करने का काम किया यह संदेश दिया कि आप सभी लोग एक पेड़ मां के नाम अवश्य लगाए कार्यक्रम का अंतिम स्वरूप देते हुए गोपीगंज विधानसभा औराई के अंतर्गत जीटी रोड पर पोल संख्या 41 पर एक राष्ट्र एक चुनाव के संबंधित वॉल राइटिंग किया और यह संदेश दिया कि देश में एक चुनाव एक राष्ट्र सर्वाधिक लोगों की मांग है जिसका कानून लागू हो और देश में समुचित व्यवस्था कराना है जिला अध्यक्ष दीपक मिश्रा ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया और उपस्थित कार्यशाला में सभी लोगों का मार्गदर्शन किया आने वाले सभी अभियानों में पार्टी को आश्वासन दिया की पार्टी लगातार कार्यकर्ता अपने मेहनत के बल पर जनपद भदोही को आगे ले जाने में मदद करेंगे उपस्थित औराई विधायक दीनानाथ भास्कर वरिष्ठ भाजपा नेता नागेंद्र सिंह जिला महामंत्री लालता प्रसाद सोनकर सुरेंद्रनाथ पांडेय प्रदीप सिंह गोवर्धन राय अखिलेंद्र सिंह बघेल चिंटू मनीष पांडेय वीरू शुक्ला छत्रपति सिंह अशोक पाठक मंडल अध्यक्ष शैलेश पांडेय राकेश गुप्ता राकेश सिंह शिवलाल मौर्य वेद मौर्य गोरेलाल पांडेय प्रियंका जायसवाल राज यादव राजेश पटेल संगीता खन्ना दिलीप गुप्ता सुनील मिश्रा दीपक सिंह योगेश मिश्रा अभिषेक तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

इफको फूलपुर में मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

फूलपुर (ब्यूरो)। इफको फूलपुर इकाई में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विजय, क्षेत्रीय अधिकारी, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड रहे। कार्यकारी निदेशक (तकनीकी) संजय वैश्य के नेतृत्व में इफको चिकित्सालय परिसर के आसपास वृहद वृक्षारोपण हुआ। वरिष्ठ प्रबंधक (ई.पी.सी) उमेश कुमार ने पर्यावरण सप्ताह की औपचारिक शुरूआत की। इस वर्ष का विषय 'प्लास्टिक प्रदूषण को हराना' है।

इस अभियान का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र, वन्य जीवन और मानव स्वास्थ्य पर प्लास्टिक कचरे के हानिकारक प्रभावों के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है। इस दौरान संयुक्त महाप्रबंधक (स्वास्थ एवं चिकित्सा सेवाएँ) डॉ सत्य प्रकाश, प्रबंधक (ई.पी.सी.) मनोज तिवारी मौजूद रहे।

उत्पीड़न के खिलाफ धरना जारी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। अन्याय, शोषण उत्पीड़न के खिलाफ के खिलाफ बीएचईएल कम्पनी पर 45वें दिन भी कर्मचारियों का धरना प्रदर्शन जारी रहा

आंदोलन के बारे में जानकारी देते हुए सीटू जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा ने बताया कि मैसर्स- भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड प्लॉट नंबर- 25, सेक्टर- 16, नोएडा के प्रबंधन द्वारा संस्थान में वर्षों वर्षों से लगातार स्थाई रूप से कार्यरत श्रमिकों का लगातार आर्थिक शोषण, उत्पीड़न करने संस्थान पर लागू वेतनमान श्रमिकों को भुगतान न करने और उक्त पर संगठित होकर आवाज उठाने पर 17 से 21 अप्रैल 2025 के मध्य 17 कर्मचारियों को गैर कानूनी तरीके से नौकरी से निकाल दिया।

संयुक्त किसान मोर्चा की हुई बैठक

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। कल संयुक्त किसान मोर्चा की बैठक गणेशरम होटल, रेस्टोरेंट सेक्टर 149 में एक बैठक हुई । बैठक मे जिले के किसानों की विभिन्न समस्याओं एवं आगामी कार्यक्रमों पर गंभीरता से चर्चा हुई। बैठक मे 11 जुन को ग्रेटर प्राधिकरण से संबंधित किसानों की समस्याओं एवम असल बिल्डर सहित अन्य बिल्डर के खिलाफ ग्रेटर प्राधिकरण पर महापचायत करने का फ़ैसला लिया गया। इस मौके पर पवन खटाना प्रदेश अध्यक्ष पश्चमी उत्तर प्रदेश भाकियू मौजूद रहे।

विकास कार्य को लेकर विधायक से मिले

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। भाजपा किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष मनोज प्रधान के नेतृत्व में कल गांव के विकास के मुद्दे को लेकर नोएडा के विधायक पंकज सिंह से लोगों ने मुलाकात की और गांव की समस्याओं से विधायक पंकज सिंह को अवगत कराया।

मुलाकात के बाद भाजपा नेता मनोज प्रधान ने बताया कि गांव में विभिन्न विकास कार्य को लेकर विधायक पंकज सिंह से चर्चा की गई।

जिस पर विधायक ने विकास कार्य को पूरा करने का भरोसा दिया।

इफको फूलपुर में चित्रकला प्रतियोगिता

प्रयागराज (फूलपुर)। भारतीय कृषक सहकारी लिमिटेड (इफको) फूलपुर इकाई ने पर्यावरण सप्ताह 2025 के अवसर पर नर्सरी से कक्षा 4 तक के छात्र-छात्राओं के लिए एक रंगारंग चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य नन्हे बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना और रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रकृति के प्रति उनका लगाव बढ़ाना था।

प्रतियोगिता में स्थानीय विद्यालयों से बड़ी संख्या में छोटे-छोटे बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ, स्वच्छ पर्यावरण, हरी-भरी धरती, जल ही जीवन है जैसे विषयों पर सुंदर और रंग-बिरंगे चित्र बनाए। इन नन्हे कलाकारों की रचनात्मकता और पर्यावरण के प्रति उनके उत्साह ने सभी दर्शकों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर इफको फूलपुर के कार्यकारी निदेशक (तकनीकी) श्री संजय वैश ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा के बीज हमें बचपन में ही बोने चाहिए। आज के बच्चों की कल्पनाओं में एक स्वच्छ, हरित और सुंदर भविष्य की तस्वीर दिखाई देती है। इफको हमेशा ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहित करता रहेगा।

इस अवसर पर उमेश कुमार वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण), मनोज कुमार प्रबंधक (पर्यावरण) डी के शुक्ला एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

त्यौहार को लेकर विशेष सचिव का दौरा

दादरी। नोडल अधिकारी उदयभानु त्रिपाठी विशेष सचिव नगर विकास विभाग शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित भी किया गया। तत्पश्चात नगर पालिका परिषद

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा नगर पालिका परिषद दादरी गौतमबुद्धनगर में आगामी त्योहारों, गंगा दशहरा और ईद उल अजहा, विश्व पर्यावरण दिवस तथा अंतराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून), नाला-नालियों की साफ सफाई एवं शुद्ध पेयजलापूर्ति व्यवस्था के दृष्टिगत स्थलीय निरीक्षण किया गया।

अधिकारी ने ईदगाह आम का रोड, एम आर एफ सेंटर और वेस्ट टू कंपोस्ट प्लांट पर जाकर स्थल पर निरीक्षण किया। नगर पालिका अध्यक्ष महोदया गीता पंडित द्वारा दादरी कार्यालय में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें चारुल यादव एसडीम सदर प्रभारी ईओ बिलासपुर, अभय कुमार सिंह एसडीम जेवर प्रभारी ईओ जेवर, विवेक कुमार भदौरिया एसडीम जेवर न्यायिक प्रभारी ईओ जहांगीरपुर, ईओ दादरी शालिनी गुप्ता, ईओ दनकौर फिरोज अहमद, जयपाल सिंह अवर अभियंता, उत्कर्ष तोमर, श्रवण कुमार,गौरव सैनी, अरुण बंसल, सोहराब, नरेंद्र सिंह राठौड़,शिव कुमार आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड गौतमबुद्धनगर।

पत्रांक- 208 /ग्रा0अ0वि0/निविदा-पत्रा./2025-26 दिनांक:- 22.05.2025

ई0-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना संख्या- 03

1- महामहिम श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश की ओर से अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड गौतमबुद्धनगर उत्तर प्रदेश के द्वारा ए0बी0सी0डी0 श्रेणी में कार्यो की लागत सीमा के अनुरूप पंजीकृत निविदादाताओं से ई-टेण्डरिंग के माध्यम से प्रतिशत दर के आधार पर नीचे दर्शाये गये कार्यो हेतु निविदा आंमत्रित की जाती है। बिड डाक्यूमेंट के साथ संलग्न बिल ऑफ क्वान्टिटी के अंकित दरों में जी0एस0टी0 के अतिरिक्त अन्य सभी कर समिलित है, जी0एस0टी0 का भुगतान सरकार के निर्देशानुसार नियमानुसार अलग से किया जायेगा। निविदादाताओं से अपेक्षा की जाती है, कि निविदा डालने से पूर्व निविदा प्रपत्रों में अंकित एस0बी0डी0 के अन्तर्गत न्यूनतम अर्हता के सम्बन्ध में सभी शर्तों का भली-भॉति अध्ययन कर लें।

2- कार्यो से सम्बन्धित विवरण निम्नवत् हैं :-

क्र. सं.	कार्य का नाम	विधान सभा क्षेत्र का नाम	निर्माण लागत जीएसटी रहित (रू0 लाख में)	बिड सिक्योरिटी (रू.लाख में) 2% EMD	निविदा प्रपत्र का मूल्य जीएसटी सहित	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6	7
1	ग्राम मोहियापुर नोएडा में सर्विस रोड न्यू दल्लुपुरा तक खंडजा निर्माण कार्य।	दादरी	16.51	0.34	300+18% GST+500 (S.Charge) 854.00	3 माह
2	ग्राम गिरधरपुर में विनायक इन्कलेव में माधव किराना स्टोर से सुमन राय के मकान तक इंटरलॉकिग टाइल्स व नाली निर्माण कार्य।	दादरी	13.00	0.26	225+18% GST+500 (S.Charge) 766.00	3 माह

1- वैवसाईट पर बिड डाक्यूमेंट की उपलब्धता की तिथि एवं समय:- 14.06.2025 प्रात: 10:00 बजे से।
2- बिड डाक्यमेंट डाउनलोडिंग प्रारम्भ करने की तिथि एवं समय:- 14.06.2025 प्रात: 10:00 बजे से।
3- प्री0 बिड मीटिंग की तिथि एवं समय:- 16.06.2025 प्रात: 11:00 बजे से। बैठक हेतु स्थल:-कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड गौतमबुद्धनगर, विकास भवन, सूरजपुर।
4- ई-निविदा के माध्यम से निविदा डालने की प्रारम्भ तिथि एवं समय:- 14.06.2025 प्रात: 10:00 बजे से।
5- ई-निविदा के माध्यम से निविदा प्राप्ति की अन्तिम तिथि एवं समय:- 21.06.2025 दोपहर: 12:00 बजे से।
6- ई-निविदा के माध्यम से निविदा खोलने की तिथि एवं समय:- 21.06.2025 सायं 04:30 बजे से।
7- टेण्डर प्रक्रिया से पूर्व का कोई भी शपथ पत्र मान्य नही होगा।
8- कार्य को पूर्ण करने की अवधि उक्त तालिका के कॉलम संख्या-5 में वर्षाकाल सहित अंकित है।
9- निविदा प्रपत्र शुल्क का भुगतान इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से किया जाना अनिवार्य होगा।
10- निविदा से सम्बन्धित नियम/शर्ते तथा अन्य विवरण http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।
11- नियोक्ता को आई.टी.बी. क्लॉज 10 ऑनलाइन के अनुसार परिशिष्ट/शुद्धिपत्र जारी करने का अधिकार है जो किसी भी समाचार पत्र में प्रकाशित नही किया जाएगा। सभी संभावित बोलीदाताओं को सलाह दी जाती है कि नियमित रूप से निगरानी रखें और नियमित रूप से ई-निविदा पोर्टल पर जाए।

www.upidadv.up.gov.in
Upid-234497 Dt. 02/06/2025

अधिशासी अभियन्ता,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग
प्रखण्ड गौतमबुद्धनगर

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया गोदान की पुकार फिल्म का उद्घाटन

ग्रेटर नोएडा/ देहरादून (चेतना मंच)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गत दिनों गोदान की पुकार फिल्म का उद्घाटन किया। इस मौके पर शंकराचार्य राज राजेश्वर आश्रम महाराज मौजूद रहे।

कार्यक्रम में भाजपा नेता संदीप भाटी सत्या भी रहे मौजूद

गौ माता के ऊपर यह फिल्म बनाई जा रही है। फिल्म के उद्घाटन कार्यक्रम में भारी संख्या में लोग मौजूद रहे। यह जानकारी दीनदयाल गौशाला समिति के सदस्य एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता संदीप भाटी सत्या ने दी है। उन्होंने बताया कि गोदान की पुकार फिल्म में गौ माता की रक्षा कैसे की जाए और उनकी सेवा के बारे में पूरी विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को देहरादून के धारकोट गांव में फिल्म 'गौदान की पुकार' के मुहूर्त शॉट पर ताली बजाई।

फिल्म शूटिंग के मुहूर्त के मौके पर सीएम धामी ने कहा कि यह फिल्म गोरक्षा और उसके कल्याण पर आधारित है। उनका मानना है कि फिल्म का प्रेरणादायक संदेश देश में लोगों को गौ सेवा अपनाने में मदद करेगा।

सीएम धामी ने मुहूर्त समारोह की तस्वीरें साझा कीं और राज्य की नई फिल्म नीति की सराहना की। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में इस समय 200 से अधिक फिल्मों की शूटिंग चल रही है, जिससे यह फिल्म निर्माण के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है। फोटो शेयर करते हुए सीएम धामी ने लिखा, 'देहरादून में फिल्म 'गौदान की पुकार' के मुहूर्त शॉट पर ताली बजाई।

उन्होंने कहा कि राज्य की नई फिल्म नीति ने उत्तराखंड को फिल्म निर्माण के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है। वर्तमान में, राज्य में 200 से अधिक फिल्मों की शूटिंग चल रही है। इससे न केवल पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जाया गया है, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं।

फिल्म में मनोज जोशी और उपासना सिंह मुख्य भूमिका में नजर आने की उम्मीद है। निर्माताओं ने अभी तक फिल्म के विवरण का खुलासा नहीं किया है।

मायचा के लीजबैक के प्रकरणों पर हुई सुनवाई

ग्रेटर नोएडा। किसानों के लीज बैक के प्रकरणों को निस्तारित करने के लिए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की तरफ से सुनवाई जारी है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के ओएसडी गिरीश कुमार झा, ओएसडी जितेंद्र गौतम और ओएसडी राम नयन सिंह ने शुक्रवार को मायचा के 26 प्रकरणों पर सुनवाई की। किसानों से साक्ष्य भी प्राप्त किए। ओएसडी भूलेख गिरीश कुमार झा ने बताया कि किसानों की मांग पर लीज बैक के प्रकरणों को निस्तारित करने के लिए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की आबादी व्यवस्थापन के लिए बनी समिति द्वारा सुनवाई की जा रही है। सुनवाई 24 मार्च से शुरू हुई है। तय शेड्यूल के अनुसार ग्रामवार सुनवाई की जा रही है।

चोरी की बाइक के साथ दबोचा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बिसरख पुलिस ने मुखबिर की सूचना के आधार पर एक शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। इसके पास से चोरी की दो बाइक बरामद हुई हैं।

थाना प्रभारी सुजीत उपाध्याय ने बताया कि पुलिस टीम रबूपुरा गोल चक्कर कस्बे पर गश्त कर रही थी। इस दौरान मुखबिर ने सूचना दी की एक वाहन चोर चोरी की बाइक लेकर रबूपुरा की तरफ से झाझर की तरफ जाने वाला है। बदमाश चोरी की बाइक को बेचने की फिराक में है। पुलिस टीम ने मुखबिर के इशारे पर सेक्टर-20 की तरफ से बाइक पर आ रहे बाइक सवार को जांच के लिए रोका। बाइक सवार से जब बाइक के पेपर मांगे गए तो वह दिखा नहीं पाया पूछताछ में बाइक सवार ने अपना नाम अनुज पुत्र धर्मपाल निवासी जनपद गाजियाबाद बताया।

अनुज ने स्वीकार किया कि उक्त बाइक चोरी की है वह दादरी कस्बे में हाल में रह रहा है और उसने यह बाइक दादरी क्षेत्र से ही चोरी की है। पूछताछ करने पर अनुज ने बताया कि उसने कुछ समय पूर्व एक और मोटरसाइकिल दादरी से चोरी की थी जिसे उसने छुपा कर रखा हुआ है। अनुज की निशानदेही पर चोरी की दूसरी बाइक भी बरामद की गई। आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर न्यायालय में पेश किया गया है।

ससुराल में दो बहनों का दहेज के लिए उत्पीड़न

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना कासना में एक महिला ने अपने ससुराल वालों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है पीड़िता का आरोप है कि दहेज में फॉर्च्यूनर कार व 10 लाख रुपए न मिलने पर ससुराल वाले उसका तथा उसकी बहन का उत्पीड़न कर रहे हैं।

ग्रेटर नोएडा निवासी कल्पना (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उसकी तथा उसकी छोटी बहन की शादी ग्राम अजबलपुर जनपद गाजियाबाद निवासी पंकज तथा पियूष के साथ हुई थी। शादी के समय उसके परिजनों में अपनी हैसियत के अनुसार दान दहेज दिया था इसके बावजूद भी ससुराल वाले उससे संतुष्ट नहीं थे। शादी के कुछ समय बाद ससुराल में दोनों बहनों का दहेज को लेकर उत्पीड़न होने लगा। कल्पना के मुताबिक उसके पति पंकज तथा उसके बहन के पति पीयूष ने उन पर मायके से फॉर्च्यूनर कार व 10 लाख रुपए लाने का दबाव डालना शुरू कर दिया।

उन्होंने जब दहेज लाने से इनकार किया तो उनके साथ मारपीट की जाने लगी। इस संबंध में उन्होंने जब अपने परिजनों को बताया तो उन्होंने ससुराल वालों को समझाने का प्रयास किया लेकिन उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। पीड़िता के मुताबिक 4 सितंबर 2024 की रात्रि को उसके पति पंकज देवर पीयूष, उनके मामा श्रवण तथा ससुर ने उसके हाथ पैर दबा लिए और मेडिकल स्टोर से लाई गई गर्भपात करने की गोलियां जबरन खिला दी। गोलियां खाने की वजह से उसका गर्भपात हो गया। पीड़िता के मुताबिक उसके पति व ससुराल वाले बदमाश किस्म के व्यक्ति हैं और अवैध हथियार रखते हैं। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने उसके पति पंकज ससुर घनश्याम सास सरिता सरवन नितिन आदि के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

पृष्ठ एक के शेष....

देश में कोविड के....

-पश्चिम बंगाल ने 24 घंटे में 26 नए मामले और 88 रिकवरी दर्ज की। राज्य में सक्रिय मामलों की संख्या 622 है और मृतकों की संख्या अभी भी 1 पर बनी हुई है।

दिल्ली में शनिवार को 73 नए मामले आए हैं। एक्टिव मामलों की संख्या 665 हो गई है। 1 जनवरी 2024 से अब तक 7 मौतें दर्ज हुई हैं।

-छत्तीसगढ़ में शनिवार को 17 नए केस सामने आए। राज्य में एक्टिव मामलों की संख्या 41 हो गई है। अभी तक कोई मौत दर्ज नहीं की गई है।

-हरियाणा में शनिवार को 9 नए मामले सामने आए। गुरुग्राम और फरीदाबाद सबसे ज्यादा प्रभावित जिले हैं। राज्य में 87 एक्टिव केस हैं और कुल संक्रमितों की संख्या 151 हो चुकी है।

-अधिकारियों के मुताबिक, अधिकांश मामले हल्के हैं और घरों पर ही इलाज किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि कोविड-19 अब एंडेमिक (स्थायी) हो चुका है और इसके हल्के संक्रमण समय-समय पर आते रहेंगे, लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है।

-5 जून को देशभर के अस्पतालों में मॉक ड्रिल की गई ताकि ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, आइसोलेशन बेड और जरूरी दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

गुणवत्ता के साथ....

उन्होंने बताया कि जनपद में चल रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यदि गुणवत्ता में कमी पाई गई तो चीफ इंजीनियर को जिम्मेदार हटाया जाएगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का स्पष्ट कहना है कि समय पर सभी प्रोजेक्ट पूरे हों तथा गुणवत्ता के साथ कोई भी समझौता नहीं किया जाए।

उन्होंने कहा कि जब से उन्होंने यूपी सिडको के अध्यक्ष का पद संभाला है तब से 20 नए प्रस्ताव लेकर आए हैं जिन पर तेजी से काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि विदेश की तर्ज पर ऊंची भवन निर्माण के लिए भी यूपी सिडको देश के विभिन्न आईटीआई से संपर्क कर रहा है ताकि आने वाले समय में कम समय में अच्छी बिल्डिंग बनाई जा सके। उन्होंने बताया कि सूरजपुर में कलेक्टर के पास उप निबंधन विभाग का एक कार्यालय बन रहा है। वहीं जेवर के देवरा गांव में समाज कल्याण विभाग की सहयोग से एक स्कूल का निर्माण किया जा रहा है तथा जेवर दनकौर व दादरी में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्रावासों का भी निर्माण किया जा रहा है।

इस मौके पर उनके साथ भारतीय जनता पार्टी की महामंत्री डिंपल आनंद तथा अधिकारी भी मौजूद थे।

भंडारा व शरबत ....

के सामग्री के उपयोग पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। यदि कोई भी ऐसे कार्यक्रमों में प्लास्टिक सामग्री का उपयोग करता है तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। श्री सिंह ने कहा कि सार्वजनिक स्थलों तथा सड़कों के किनारे भंडारा, प्याऊ तथा शरबत वितरण आदि कार्यक्रम करने के पूर्व सेक्टर 94 स्थित जन स्वास्थ्य विभाग से अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति के बिना यदि ऐसे आयोजन किया तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

नशे में दी थी....

इस धमकी भरे कॉल के बाद से ही पुलिस आरोपी की तलाश कर रही थी। वहीं, अब पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने पत्नी लड़ाई के बाद शराब के नशे में कॉल किया था। आरोपी से पूछताछ की जा रही है। आपको बता दें कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को गाजियाबाद में आपातकालीन हेल्पलाइन पर जान से मारने की धमकी दी गई, जिसके बाद पुलिस ने कॉल करने वाले का पता लगाने के लिए जांच शुरू की थी।

अधिकारियों के अनुसार डायल 112 आपातकालीन हेल्पलाइन पर एक कॉल आया था। सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) रितेश त्रिपाठी ने कहा था कि जल्द ही आरोपी का पता लगा लिया जाएगा।

घर में घुसकर...

आई तो आरोपियों ने उनके साथ भी मारपीट की शोर सुनकर पड़ोस में रहने वाले जया किशोर व जैकी भी मौके पर पहुंच गए और उन्हें बचाने का प्रयास किया। इस पर हमलावरों ने उनके साथ भी मारपीट कर उन्हें घायल कर दिया। जाते-जाते आरोपी मौका मिलने पर जान से मार देने की धमकी देकर फरार हो गए।

गोपाल के मुताबिक इस घटना में उसकी मां प्रेमा, पड़ोसी जय किशोर व जैकी को गंभीर चोटे आई हैं। पुलिस का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है और जांच पड़ताल की जा रही है।

खास खबर

रॉब वॉल्टर बने न्यूजीलैंड टीम के नए हेड कोच

वेलिंगटन। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व व्हाइट-बॉल कोच रॉब वॉल्टर को न्यूजीलैंड पुरुष क्रिकेट टीम का नया हेड कोच नियुक्त किया गया है। वॉल्टर अगले तीन वर्षों तक टीम की कमान सभी फॉर्मेट्स—टेस्ट, वनडे और टी20—में संभालेंगे। 49 वर्षीय वॉल्टर दक्षिण अफ्रीका की कोचिंग से हाल ही में अलग हुए थे, जबकि उनके अनुबंध की मियाद अभी दो साल और बची थी। उनके नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका ने 2023 वनडे वर्ल्ड कप और 2025 चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल तक का सफर तय किया, वहीं 2024 टी20 वर्ल्ड कप में टीम फाइनल तक पहुंची थी। गौर करने वाली बात यह है कि वॉल्टर की फैमिली पहले से ही न्यूजीलैंड में रहती है और उन्होंने हॉक्स बे में अपना ठिकाना बनाया हुआ है। न्यूजीलैंड की घरेलू टीमों ओटागो वोल्ट्स और सेंट्रल स्टैग्स के साथ कोचिंग अनुभव भी उनके खाते में है। वॉल्टर ने 2022-23 सीजन में सेंट्रल स्टैग्स को फोर्ड ट्रॉफी और प्लंकेट शील्ड जीत दिलाई थी।

नायशा और सारांश बैडमिंटन स्पर्धा के फाइनल में

इन्दौर । सरताज अकादमी द्वारा आयोजित 61वीं टाइगर लीग बैडमिंटन स्पर्धा में नायशा पुरोहित ने बालिका वर्ग के खिताबी मुकाबले में जगह बनाई। सारांश तिरोले बालक वर्ग के फाइनल में हैं। अशांक मिश्रा अब तक अपराजित हैं। युगल मुकाबले भी शुरू हुए। नारायण बाग बाल विकास केंद्र बैडमिंटन हाल में 31वें सरताज ग्रीष्मकालीन जूनियर बैडमिंटन शिविर के तहत हो रही इस स्पर्धा में नायशा पुरोहित ने ऋत्वी दवे को 15-2, 15-3 से और शिवांश सुनेरे को 17-15, 15-6 से हराया। सारांश तिरोले ने शिवांश शर्मा को 15-9, 15-13 से और अशांक मिश्रा ने आदित्य तिलवनकर को 15-8, 15-9 से पराजित किया। सारांश तिरोले ने अर्णव शाह को 17-15, 12-15, 15-9 से और अशांक मिश्रा ने ऋत्वी दवे को 15-5, 15-7 से हराया। आदित्य तिलवनकर ने अथर्व चौधरी को 15-8, 15-5 से और अदवित शाह को 15-3, 15-11 से पराजित किया।

महिला क्रिकेट भी अब फायदेमंद हो रहा : मंधाना

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने कहा है कि कि महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीए) और अन्य लीगों को जिस प्रकार से सुफलता मिल रही है। उससे साफ है कि महिला क्रिकेट का भविष्य अच्छा है और इससे राजस्व भी मिल रहा है। मंधाना को पहली बार हो रही महाराष्ट्र महिला प्रीमियर लीग क्रिकेट में रत्नागिरी जेट्स का कप्तान बनाया गया है। उन्होंने कहा, ह्यमहिला क्रिकेट को इस तरह का मंच मिलना खुशी की बात है। प्रदेश संघों और डब्ल्यूपीएल ने भी इसमें काफी मदद की है। इससे साबित होता है कि महिला क्रिकेट से भी अब राजस्व मिने लगा है जो एक अच्छा संकेत है। उन्होंने कहा, ह्याकारोबारी अब महिला क्रिकेट में भी पैसे लगाने को तैयार हैं। साथ ही कहा कि खेल जितना पेशेवर होगा, उतना ही बेहतर होगा और इससे जमीनी स्तर के क्रिकेटरों को लाभ होगा। देश में इस समय महिला क्रिकेट में भी निवेश आ रहा है जिससे खिलाड़ी को आगे बढ़ने में सहायता मिल रही है।

अर्जेंटीना ने चिली को 1-0 से हराया

फीफा विश्व कप क्वालीफायर

एजेंसी

नई दिल्ली। फीफा विश्व कप 2026 के क्वालीफाई मुकाबले में अर्जेंटीना ने चिली को 1-0 से हराकर तीन अंक हासिल किए। यह मुकाबला गुरुवार को सैंटियागो में खेला गया। अर्जेंटीना के लिए एकमात्र गोल जूलियन अल्वारेज ने 23वें मिनट में किया। अर्जेंटीना और चिली के बीच फुटबॉल में लंबे समय से जबरदस्त प्रतिद्वंद्विता रही है, जिसमें 1942 की दक्षिण अमेरिकी चैम्पियनशिप से लेकर 2016 कोपा अमेरिका फाइनल तक के मुकाबले शामिल हैं। उस फाइनल में हार के बाद लियोनेल मेसी ने अंतरराष्ट्रीय संन्यास की घोषणा कर दी थी, हालांकि बाद में वे दोबारा खेल में लौट आए थे। इस मुकाबले में अर्जेंटीना पहले ही विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर चुका था, इसलिए कप्तान मेसी को शुरूआती ग्यारह खिलाड़ियों में शामिल नहीं किया गया। टीम ने युवा खिलाड़ियों निको पाज, जूलियन अल्वारेज और जियोवानी सिमीओने के साथ शुरूआत की। हालांकि, मैच की पहली वास्तविक कोशिश चिली ने की, जब तीसरे ही मिनट में एलेक्सिस सांचेज ने बॉक्स के बाहर से जोरदार शॉट लगाया, जिसे गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज ने शानदार बचाव करते हुए रोक लिया। इसके बाद अर्जेंटीना ने खेल पर नियंत्रण बना लिया और पहले हाफ में चिली को कोई खास मौका नहीं दिया। 13 मिनट बाद थियागो आल्माडा ने एक शानदार पास दिया, जिसे अल्वारेज ने चिप शॉट से गोल में तब्दील कर दिया। गेंद गोलपोस्ट से लगकर भीतर चली गई। दूसरे हाफ में चिली ने वापसी की कोशिश की और 60वें मिनट के बाद तीन बार गोल करने की कोशिश की, लेकिन अर्जेंटीना की मजबूत रक्षा और गोलकीपर मार्टिनेज की फुर्ती ने उसे बराबरी का मौका नहीं दिया। इस जीत के साथ अर्जेंटीना ने दक्षिण अमेरिकी क्वालीफाइंग अंक तालिका में अपराजेय बढ़त बना ली है, जबकि चिली सबसे नीचे है और उसकी विश्व कप में जगह बनाने की उम्मीदें लगभग खत्म हो गई हैं। अब अर्जेंटीना 10 जून को कोलंबिया से भिड़ेगा, जबकि चिली का सामना उसी दिन बोलिविया से होगा। 2026 विश्व कप के लिए शीर्ष छह टीमें सीधा प्रवेश पाएंगी।

सचिन ने ट्रॉफी के लिए विराट ने ज्यादा इंतजार किया : सहवाग

एजेंसी

नई दिल्ली । पूर्व क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने कहा है कि एक ट्रॉफी जीतने के लिए सचिन तेंदुलकर ने विराट कोहली ने से अधिक इंतजार किया था। सहवाग ने कहा कि कोहली को ट्रॉफी जीतने के लिए सिर्फ 18 साल इंतजार करना पड़ा। वहीं तेंदुलकर ने 1989 से 2011 तक विश्व जीतने के लिए इंतजार किया है। कोहली को कम इंतजार करना पड़ा फिर भी सचिन ने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी थी। उन्होंने तय कर लिया था कि वह विश्व कप ट्रॉफी को लेकर ही मैदान से बाहर निकलेंगे। सहवाग ने कहा कि अब कोहली जब भी संन्यास का फैसला लेंगे, तो उन्हें राहत मिलेगी।

उन्होंने कहा, विराट के लिए भी यही बात है। अब वह खुश होकर आईपीएल को अलविदा कह सकते हैं। एक खिलाड़ी ट्रॉफी जीतने के लिए ही खेलता है। पैसा आता है और जाता है पर ट्रॉफी जीतना आसान नहीं होता है। कोहली इस बार टीम के अभियान में बहुत मजबूत योगदान दिया। विराट ने इस सत्र के 15 मैचों में 657 रन आरसीबी के लिए बनाए और वे टीम के लिए शीर्ष रन स्कोरर रहे। वह ऑरेंज कैप की रेस में तीसरे स्थान पर रहे।

अगले छह माह में भारतीय टीम पांच टीमों से खेलेगी

एजेंसी

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम को अगले छह माह का कार्यक्रम काफी व्यस्त है और उसे पांच टीमों से 9 सीरीज खेलनी है। इसकी शुरूआत 20 जून से इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज से होगी। इस सीरीज में पांच टेस्ट मैच खेले जाएंगे। ये भारत और इंग्लैंड की पहली सीरीज होगी इससे दोनो ही टीमों का विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) चक्र भी शुरू होगा। ये टेस्ट सीरीज 4 अगस्त तक चलेगी। इसके बाद भारतीय टीम बांग्लादेश के दौरे पर जाएगी, जहां 3 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय और 3 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज खेलनी है। इस प्रकार 6 महीने में 9 सीरीज होंगी। इसके बाद एशिया कप 2025 का कार्यक्रम है हालांकि अभी इसकी तारीखें घोषित नहीं की गयी हैं। भारतीय टीम का बांग्लादेश का दौरा 17 अगस्त से शुरू होकर 31 अगस्त तक चलेगा। इसके बाद भारतीय टीम घर पर दो मैचों की टेस्ट सीरीज में वेस्टइंडीज से खेलेगी। इसके तहत 2 अक्तूबर से 14 अक्तूबर तक दो टेस्ट मैच होंगे। इसके बाद भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी। इसमें भारतीय टीम को 19 अक्तूबर से 8 नवंबर तक 3 एकदिवसीय और 5 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज खेलनी है। इसके बाद भारतीय टीम 14 नवंबर से 19 दिसंबर तक दक्षिण अफ्रीका से 2 टेस्ट, 3 एकदिवसीय और 5 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज की मेजबानी करेगी।

आईपीएल से विराट ने कमाये 27 करोड़ से अधिक

एजेंसी

नई दिल्ली । रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली इस बार आईपीएल खिताब जीतने में सफल रहे। विराट का इस सत्र में प्रदर्शन काफी अच्छा रहा और उन्होंने 657 रन बनाये। विराट आईपीएल की शुरूआत साल 2008 से ही आरसीबी के साथ हैं। वहीं कमाई की बात करें तो विराट ने इस सत्र से करीब 27 करोड़ रुपये कमाये हैं। विराट कोहली को आरसीबी ने मेगा नीलामी से पहले ही 21 करोड़ रुपये में रिटेन किया था। वह हेनरिक क्लासेन 23 करोड़ के बाद रिटेन होने वाले सबसे महंगे खिलाड़ी थे। आईपीएल में खिलाड़ियों को वेतन के अलावा मैच फीस भी मिलती है। एक मैच खेलने के लिए खिलाड़ी को साढ़े 7 लाख रुपये मिले। इस सत्र में विराट ने ग्रुप राउंड में 13 मुकाबले खेले। इसके अलावा प्लेऑफ में क्वालिफायर-1 और फाइनल खेला। इस तरह उनके कुल 15 मुकाबले हो गए। इसके लिए उन्हें एक करोड़ 12 लाख पचास हजार रुपये की राशि मिली। एक रिपोर्ट के अनुसार आईपीएल इनामी राशि का 30 फीसदी खिलाड़ियों के बीच बांट दिया जाता है। आरसीबी में 22 खिलाड़ी हैं और इस तरह विराट के हिस्से में करीब 27 लाख रुपये आएंगे। वहीं लीग के दौरान इंडोर्समेंट से भी विराट की कमाई करीब 5 करोड़ रुपये हुई। इस तरह आईपीएल 2025 के दौरान विराट ने लगभग 27 करोड़ 40 लाख रुपये कमा लिए। इस प्रकार हर एक मैच के लिए उन्हें एक करोड़ 83 लाख रुपये मिले।

मजबूत इच्छाशक्ति वाले खिलाड़ी हैं रजत : अमय खुरासिया

एजेंसी

नई दिल्ली । पूर्व क्रिकेटर अमय खुरासिया ने कहा है कि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को आईपीएल खिताब जिताने वाले रजत पाटीदार एक मजबूत इच्छाशक्ति वाले खिलाड़ी हैं। खुरासिया पूर्व में पाटीदार के कोच भी रहे हैं। खुरासिया ने कहा कि पाटीदार बाहर से बेहद शांत नजर आते हैं पर उनके अंदर सफलता के लिए जुनून है। साथ ही कहा, ह्यधैर्य और सही समय पर सही फैसला लेना सफल व्यक्ति के दो बड़े गुण होते है और पाटीदार को ये आत है। पाटीदार ने इस सत्र में कुशल कप्तानी के साथ ही अच्छी बल्लेबाजी भी की। उन्होंने 15 मैचों में 312 रन बनाये। उन्होंने आईपीएल में 42 मैचों में एक शतक और नौ अर्धशतक की सहायता से 1111 रन बनाए हैं। पाटीदार आरसीबी में एक चोटिल खिलाड़ी की जगह शामिल हुए थे पर साल 2022 सत्र में लखनऊ सुपरजायंट्स के खिलाफ शतक लगाकर उन्होंने टीम में जगह पक्की की। आरसीबी ने जब उन्हें कप्तान बनाया तो सभी हैरान थे पर ये फैसला सही निकला। पाटीदार ने 13 मैचों की टीम की कप्तानी करते हुए उसे 10 में जीत दिलायी। टीम ने पहली बार खिताब जीतने के साथ ही चेन्नई सुपर किंग्स को उसकी के घरेलू मैदान में हराया।

आकाश चोपड़ा ने अपनी सर्वश्रेष्ठ टीम चुनी

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने आईपीएल 2025 की अपनी सर्वश्रेष्ठ टीम चुनी है। हैरानी की बात ये है कि चोपड़ा की इस टीम में शुभमन गिल और रजत पाटीदार को जगह नहीं मिली है। गुजरात टाइटंट के कप्तान शुभमन ने जहां आईपीएल में 650 रनों के साथ ही सबसे अधिक रन बनाने वाले चौथे बल्लेबाज हैं। वहीं रजत की कप्तानी में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने पहली बार खिताब जीतने में सफलता हासिल की। चोपड़ा ने अपनी टीम में गुजरात टाइटंस के सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन और आरसीबी में शामिल रहे विराट कोहली को सलामी बल्लेबाज के तौर पर शामिल किया। सुदर्शन ने इस सत्र में सबसे अधिक 759 रन बनाकर ऑरेंज कैप जीती है। वहीं कोहली ने 15 मैचों में 657 रन बनाये हैं और वह सबसे अधिक रनों के मामले में तीसरे नंबर पर हैं।

नॉर्वे शतरंज : कार्लसन अंतिम राउंड से पहले बढ़त पर

- हिकारु ने अर्जुन को हराया अमार्गेडन में, महिलाओं के टूर्नामेंट में कोनेरू हम्पी की मजबूत स्थिति

एजेंसी

स्टावेंगर (नॉर्वे)। नॉर्वे शतरंज 2025 का नौवां राउंड रोमांच से भरपूर रहा, जहां शीर्ष खिलाड़ियों के निर्णायक मुकाबलों ने अंक तालिका को पूरी तरह हिला कर रख दिया है। दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन ने फबियानो करूआना के खिलाफ अहम जीत दर्ज की। शुरूआत से ही कार्लसन ने बढ़त बना ली थी और एंडगेम तक पहुंचते-पहुंचते करूआना की मजबूत डिफेंस को तोड़ते हुए मुकाबला अपने नाम कर लिया। वहीं, मौजूदा विश्व चैंपियन गुकेश और चीन के शीर्ष खिलाड़ी वे यी के बीच मुकाबला बेहद रोचक रहा। शुरूआती दौर में वे यी की एक बड़ी चूक का फायदा उठाते हुए गुकेश ने आक्रामक खेल दिखाया और जीत की ओर बढ़ते चले गए। एंडगेम में उन्होंने सटीकता के साथ जीत को सुनिश्चित किया। हिकारु नाकामुरा और अर्जुन एरिगैसी के बीच क्लासिकल मुकाबला ड्रॉ रहा, लेकिन अमार्गेडन गेम में नाकामुरा ने जीत हासिल कर अतिरिक्त अंक बटोर लिए। अंतिम राउंड से पहले मैग्नस कार्लसन आधा अंक की बढ़त के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि गुकेश डी नजदीकी पीछा कर रहे हैं। फाइनल राउंड अब बेहद रोमांचक होने की उम्मीद है। महिलाओं के टूर्नामेंट में भी नौवां राउंड बेहद उतार-चढ़ाव भरा रहा। सभी तीन मुकाबले निर्णायक रहे, जिससे अंतिम दिन के पहले अंक तालिका में बड़ा उलटफेर हुआ है। वैशाली रमेशबाबू और सारा खादेमअलशारिया के बीच मुकाबला बेहद जटिल रहा। सारा ने समय पर दबाव बनाए रखा और अपनी बढ़त को बरकरार रखते हुए मुकाबला जीत लिया। जू वेनजुन और अन्ना मुजिचुक की भिड़ंत में अन्ना ने शुरू में ही एक्सचेंज की कुर्बानी देकर खेल में पकड़ बनाई। जू की एक बड़ी रक्षात्मक गलती के चलते अन्ना ने आसानी से मुकाबला अपने नाम कर लिया। कोनेरू हम्पी और लेई तिंगजी के मुकाबले में हम्पी ने अच्छी शुरूआत की थी, लेकिन एक बड़ी गलती ने गेम का रुख पलट दिया। लेई ने मौके का फायदा उठाते हुए जीत दर्ज की। अब अंतिम राउंड से पहले अन्ना मुजिचुक दो अंकों की बढ़त के साथ टॉप पर हैं, लेकिन हम्पी कोनेरू सहित शीर्ष चार खिलाड़ियों के पास अब भी खिताब जीतने का मौका है।

एक्सल डाटा सर्विस सुपर डिविजन क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

एजेंसी

रांची । जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित एक्सल डाटा सर्विस सुपर डिविजन क्रिकेट टूर्नामेंट (2024-25) का फाइनल मुकाबला शुक्रवारको हुआ । मेकॉन स्पोर्ट्स क्लब बनाम सेल यूनिट रांची के बीच फाइनल मैच मेकॉन स्टेडियम में खेला गया, जिसमें सेल यूनिट क्लब, रांची ने जीत हासिल कि । टूर्नामेंट का पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि जे एस सी ए पूर्व अध्यक्ष संजय सहाय एवम कार्यकारी अध्यक्ष आरडीसीए राजू शर्मा, उपाध्यक्ष सुनील कुमार, विभूति भूषण अमर ने संयुक्त रूप से विजेता एवम उपविजेता टीमों को ट्रॉफी प्रदान किए। टूर्नामेंट में बेस्ट बैटर का पुरस्कार सेल यूनिट , रांची के श्रेष्ठ सागर एवम बेस्ट बॉलर मेकॉन के राजू पाण्डेय को दिया गया और आज के फाइनल के मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार पंकज यादव को दिया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में जेएससीए कमिटी मेंबर रमेश कुमार ,रांची जिला क्रिकेट संघ के ,सचिव शैलेंद्र कुमार , सौमित्र कार्यकारी सदस्य , चंचल भट्टाचार्य, सुरेश कुमार,मुज्जफर अली ,मुन्ना,सहायक सचिव सुनील पाल ,शंभू सिन्हा,नंद जी पांडे, मानिक घोष , जय कुमार सिन्हा,सुभाष चटर्जी मुक्तेश सिंह ,हिमाशु रौनी सिंह, एस के पांडे ,सूरज मोहन मेकॉन के पी के दास, विकास सिंह एवम सेल यूनिट रांची के संजीव कुमार उपाध्यक्ष स्पोर्ट्स, विकास कुमार महाप्रबंधक, स्पोर्ट्स,राहुल श्रीवास्तव,के पी पात्रा , मुकुल आदि मौजूद थे।

मेरे पर हमेशा ही रहता है दबाव : गंभीर

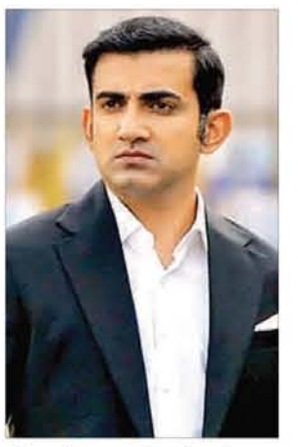

एजेंसी

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने इंग्लैंड दौरे से ठीक पहले कहा है कि मैं हमेशा ही दबाव में रहता है। गंभीर ने कहा कि परिणाम जो भी हो उनपर हमेशा ही दबाव रहता है। उन्होंने कहा कि एक कोच के रूप में वे हमेशा अच्छे परिणाम चाहते हैं और यह तथ्य कि चीजें विपरीत दिशा में जा सकती हैं, उन्हें हमेशा सतर्क रहना होता है। गंभीर की रहा मुख्य कोच बनने के बाद से ही कठिन रही है। श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में भारतीय टीम को हार का सामना करना पड़ा। वहीं न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में भी वह हारी। इसके बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भी टीम 1-3 से हारी। पिछले साल भारतीय टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी और उसके बाद से ही सभी की नजरें गंभीर की कोचिंग और इंग्लैंड दौरे में भारतीय टीम के प्रदर्शन पर रहेंगी। गंभीर ने कहा कि रोहित शर्मा और विराट कोहली के संन्यास के बाद अब उन्हें नये कप्तान शुभमन गिल के नेतृत्व वाली टीम का मार्गदर्शन करना होगा। ये इसलिए भी कठिन रहेगा क्योंकि अनुभवी तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह भी सीरीज के सभी मैच नहीं खेलेंगे। गंभीर ने कहा कि बुमराह की उपस्थिति का क्रम काफी हद तक इस बात पर रहेगा कि सीरीज में भारतीय टीम का प्रदर्शन कैसा है।

भारत की ओर से 23 निशानेबाज होंगे शामिल

- एलवेनिल की उपलब्धियां और लक्ष्य
- रमिता और मड्डेनेनी का शानदार रिकॉर्ड
- गन फॉर ग्लोरी शूटिंग अकादमी से ले रहे प्रशिक्षण

आईएसएसएफ शूटिंग वर्ल्ड कप

एजेंसी

नई दिल्ली। म्यूनिख (जर्मनी) में 8 जून से शुरू हो रहे आईएसएसएफ शूटिंग वर्ल्ड कप राइफल/पिस्टल इवेंट में भारत की ओर से 23 सदस्यीय दल भाग लेगा। इस दल में एलवेनिल वलारिवन, रमिता जिंदल और मड्डेनेनी उमामहेश जैसे प्रतिभाशाली निशानेबाज शामिल हैं, जो 'गन फॉर ग्लोरी शूटिंग अकादमी' से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। एलवेनिल वलारिवन अर्जुन अवॉर्ड विजेता हैं। उन्होंने दो बार ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और दो जूनियर वर्ल्ड कप में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। साल 2019 में उन्हें आईएसएसएफ शूटर ऑफ द ईयर का खिताब मिला था और वे 10 मीटर एयर राइफल (महिला वर्ग) में पूर्व वर्ल्ड नंबर 1 भी रह चुकी हैं। इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेने को लेकर उन्होंने एक आधिकारिक बयान में कहा, ह्मैं हमेशा अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के अवसर के लिए आभारी हूं। मेरा लक्ष्य है कि देश और अपने सभी समर्थकों को गर्व महसूस करा सकूं। गन फॉर ग्लोरी ने मेरे करियर में अहम भूमिका निभाई है, मैं उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देती हूं। रमिता जिंदल ने 2022 एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीता था और महिला 10 मीटर एयर राइफल टीम इवेंट में रजत पदक हासिल किया था। उन्होंने पेरिस ओलंपिक 2024 में फाइनल में भी जगह बनाई थी। मड्डेनेनी उमामहेश पुरुष 10 मीटर एयर राइफल कैटेगरी में कई एकल और मिक्स्ड मेडल जीत चुके हैं। उन्होंने 2023 जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य और 2022 में सुहल (जर्मनी) में हुए आईएसएसएफजूनियर वर्ल्ड कप में स्वर्ण पदक हासिल किया था। तीनों निशानेबाजों के मेंटॉर लंदन ओलंपिक 2012 के कांस्य पदक विजेता गगन नारंग ने कहा, हमें गर्व है कि हम एलवेनिल, रमिता और मड्डेनेनी की ट्रेनिंग और विकास का हिस्सा बने। ये तीनों सिर्फ शानदार निशानेबाज ही नहीं, बल्कि बेहद मेहनती और विनम्र व्यक्ति भी हैं। हम उम्मीद करते हैं कि इनकी सफलता भारत के सभी युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बने। तीनों निशानेबाज इस समय गन फॉर ग्लोरी के हाई परफॉर्मेंस कोच नेहा चव्हाण की देखरेख में अभ्यास कर रहे हैं और विश्व कप में शानदार प्रदर्शन की उम्मीद है।

जकार्ता में इंडोनेशियाई ओपन के महिला एकल में रिटर्न शॉट लगाती हुई मियाजाकी टोमोका

खास खबर

माओवादी उपाध्यक्ष को आम माफी दिए जाने के नेपाल सरकार के निर्णय को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज किया

काठमांडू, एजेंसी। हत्या के आरोपित माओवादी पार्टी के उपाध्यक्ष अग्नि सापकोटा को नेपाल सरकार के द्वारा माफी दिए जाने के निर्णय को सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दिया है। कोर्ट ने उनके खिलाफ मुकदमा चलाने का आदेश भी दिया है। बुधवार को कोर्ट ने इस मामले पर सुनवाई करते हुए गंभीर प्रकार के आपराधिक मामले में सरकार द्वारा छूट दिए जाने का निर्णय सही नहीं होने की बात कहते हुए उनके खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति प्रदान की है। अदालत के इस आदेश के बाद माओवादी उपाध्यक्ष अग्नि सापकोटा के खिलाफ हत्या का मुकदमा चलाने का रास्ता साफ हो गया है। माओवादी के द्वारा दस वर्षों तक चलाए गए सशस्त्र युद्ध के समय अग्नि सापकोटा पर काभ्रे जिला के अर्जुन लामा को शारीरिक प्रताड़ना देते हुए उसकी हत्या का आदेश देने का आरोप है। करीब 20 वर्ष पहले हुए इस हत्याकांड के बाद मृतक अर्जुन लामा के माता-पिता ने माओवादी नेता अग्नि सापकोटा को नामजद अभियुक्त बताते हुए उनके खिलाफ जिला अदालत में मुकदमा दायर किया था। देश में दूसरी बार माओवादी की सरकार डा बाबूराम भट्टराई के नेतृत्व में बनने के बाद सापकोटा के हत्या के मुकदमे को आगे नहीं बढ़ाने का निर्णय किया गया था। सरकार के इस निर्णय के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर किया गया था जिस पर बुधवार को अदालत ने अपना फैसला सुनाया है।

संयुक्त राष्ट्र ने मेजर जनरल डिओदातो अबागनारा को युनिफिल का नया प्रमुख नियुक्त किया

न्यूयॉर्क/बेरूत, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र ने लेबनान में तैनात संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (यूनिफिल) के नए प्रमुख के रूप में मेजर जनरल डिओदातो अबागनारा की नियुक्ति की घोषणा की है। वे लेफ्टिनेंट जनरल आरोल्डो लाजारो साएन्ज का स्थान लेंगे। यूनिफिल की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि अबागनारा अब इस महत्वपूर्ण शांति मिशन का नेतृत्व करेंगे, जो दक्षिण लेबनान में इजराइल और हिज्बुल्लाह के बीच संघर्ष विराम की निगरानी करता है। हालांकि 2006 के युद्ध के बाद आधिकारिक तौर पर संघर्ष विराम लागू है, लेकिन इजराइल और हिज्बुल्लाह के बीच सीमा पार हमले अब भी जारी हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इजराइल ने हाल के महीनों में दक्षिण लेबनान में हवाई हमले तेज किए हैं, जिनमें बेरूत के दक्षिणी उपनगरों को भी निशाना बनाया गया है, ये इलाके हिज्बुल्लाह का गढ़ माने जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र का यह मिशन क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए 1978 से कार्यरत है और फिलहाल इसमें लगभग 10,000 से अधिक अंतरराष्ट्रीय सैनिक तैनात हैं। नए प्रमुख अबागनारा को एक जटिल और संवेदनशील सुरक्षा माहौल में शांति स्थापना और मध्यस्थता की जिम्मेदारी संभालनी होगी।

राजशाही समर्थकों का काठमांडू केन्द्रित प्रदर्शन आज से समाप्त, जिला केंद्रित प्रदर्शन की बनी रणनीति

काठमांडू, एजेंसी। देश में राजशाही की वापसी को लेकर चलाए जा रहे काठमांडू केन्द्रित प्रदर्शन आज से समाप्त होने की घोषणा करते हुए आगे से जिला और शहर केंद्रित प्रदर्शन करने की योजना बनाई गई है। राजशाही की वापसी को लेकर संयुक्त रूप से आंदोलन कर रहे सभी राजनीतिक दल और संस्थाओं की बुधवार को हुई बैठक के बाद काठमांडू केन्द्रित प्रदर्शन को स्थगित करने का निर्णय किया गया। इस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के अध्यक्ष राजेन्द्र लिंगदेन की अनुपस्थिति में हुई इस बैठक में पहले चरण के आंदोलन के समाप्ति की घोषणा की गई। संयुक्त जन आंदोलन संघर्ष समिति की तरफ से इसके संयोजक नवराज सुवेदी ने बुधवार की देर रात को बयान जारी करते हुए आने वाले दिन में जिला और शहर केंद्रित प्रदर्शन होने की जानकारी दी है। उन्होंने इन प्रदर्शनों में नेपाली सेना, नेपाल पुलिस और अन्य सुरक्षाबलों के अवकाश प्राप्त अधिकारियों और जवानों को अधिक से अधिक सहभागी होने की अपील की है। बताया जा रहा है कि राजशाही की मांग को लेकर संयुक्त रूप से आंदोलन में उतरे राजनीतिक दल और संस्थाओं के बीच में मनमुटाव के कारण काठमांडू केन्द्रित प्रदर्शन को स्थगित करते हुए इसे प्रथम चरण का आंदोलन समाप्त होने की बात कही गई है।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति चुनाव में ली जे-म्युंग की जीत

सियोल, एजेंसी। दक्षिण कोरिया में लंबे राजनीतिक अस्थिरता और मार्शल लॉ के बाद हुए विशेष राष्ट्रपति चुनाव में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार ली जे-म्युंग ने मंगलवार को स्पष्ट जीत दर्ज करते हुए देश के नए राष्ट्रपति बनने का गौरव हासिल किया। बुधवार सुबह साढ़े 3 बजे (स्थानीय समयानुसार) के आसपास मतों की गिनती पूरी हुई और चुनाव अधिकारियों ने घोषित किया कि ली जे-म्युंग 49 प्रतिशत से अधिक मत हासिल कर विजेता रहे। वहीं, उनके मुख्य रूढ़िवादी प्रतिद्वंद्वी किम मून-सू 41.6 प्रतिशत वोटों के साथ पीछे रह गए। दोनों के बीच 2.5 मिलियन से अधिक वोटों का अंतर रहा। जीत के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ली जे-म्युंग ने कहा, ÷मैं देशवासियों की उम्मीदों पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूंगा। यह एक नया आरंभ है और अब हम आशा के साथ आगे बढ़ेंगे। हम देश की एकता, आर्थिक पुनरुत्थान और कोरियाई प्रायद्वीप में शांति सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ली ने यह भी स्पष्ट किया कि उनका प्रशासन अमेरिका के साथ दक्षिण कोरिया की रणनीतिक साझेदारी को प्राथमिकता देगा, साथ ही उत्तर कोरिया के साथ संवाद और शांति की राह को भी अपनाएगा।

वक्फ संपत्तियों की अब एक क्लिक में मिलेगी जानकारी, किरेन रिजिजू ने उम्मीद पोर्टल किया लॉन्च

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने शुक्रवार को उम्मीद पोर्टल का शुभारंभ किया और कहा कि यह वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को डिजिटल बनाएगा और पूरी तरह पारदर्शी तरीके से काम करेगा। उन्होंने कहा कि आज, वक्फ संशोधन अधिनियम की पहली कार्यान्वयन प्रक्रिया शुरू हो रही है। यह उम्मीद पोर्टल वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को डिजिटल करेगा ताकि कोई इसका दुरुपयोग या बाईपास न कर सके। यह पूरी तरह से पारदर्शी तरीके से काम करेगा। दक्षता और सशक्तिकरण इस अधिनियम का सबसे बड़ा उद्देश्य है... यह सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण होने वाला है, लेकिन विशेष रूप से गरीब मुस्लिम बच्चों, महिलाओं, अनाथों और विधवाओं के लिए। भारत में दुनिया की सबसे ज्यादा वक्फ संपत्तियां हैं। हमारे मुस्लिम समुदाय में गरीबों की आबादी बहुत ज्यादा है। इसे कम करने के लिए, वक्फ संपत्ति का उचित प्रबंधन बहुत जरूरी होने वाला है। भारत में 9 लाख से ज्यादा वक्फ संपत्तियां हैं। आने वाले दिनों में आप देखेंगे कि कितनी रजिस्ट्रेशन

होंगी।

रिजिजू ने कहा कि उम्मीद पोर्टल भारत में वक्फ संपत्ति प्रबंधन और प्रशासन के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ेगा। उम्मीद पोर्टल लॉन्च करने के बाद किरेन रिजिजू ने कहा कि इससे न केवल पारदर्शिता आएगी बल्कि आम मुसलमानों, खासकर महिलाओं और बच्चों को भी मदद मिलेगी। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय द्वारा विकसित इस पोर्टल का आधिकारिक उद्घाटन केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री जॉर्ज कुरियन की मौजूदगी में किया गया। इसे ऐतिहासिक कदम बताते हुए रिजिजू ने जोर देकर कहा कि उम्मीद पोर्टल महज एक तकनीकी उन्नयन से कहीं बढ़कर है।

उन्होंने कहा कि यह अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों की रक्षा करने और समुदाय के स्वामित्व वाली वक्फ संपत्तियों का उपयोग गरीब मुसलमानों के लिए प्रभावी और निष्पक्ष रूप से सुनिश्चित करने के लिए सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिनके लिए यह मूल रूप से बनाया गया था। यूनिफाइड वक्फ मैनेजमेंट, एम्पावरमेंट, एफिशिएंसी एंड डेवलपमेंट एक्ट, 1995 का संक्षिप्त नाम, उम्मीद सेंट्रल पोर्टल, वक्फ संपत्तियों की वास्तविक समय पर अपलोडिंग, सत्यापन और निगरानी के लिए एक केंद्रीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में काम करेगा। इस पोर्टल से भारत भर में वक्फ संपत्तियों के प्रशासन में व्यापक बदलाव आने की उम्मीद है, जिससे अधिक पारदर्शिता, जवाबदेही और सार्वजनिक भागीदारी आएगी।

प्रियांक खड़गे का बयान, हमारी सरकार किसी को भी बलि का बकरा नहीं बना रही

बेंगलुरु। कर्नाटक के मंत्री प्रियांक खड़गे ने बेंगलुरु में हुई भगदड़ की घटना पर टिप्पणी कर कहा कि जिम्मेदार अधिकारियों को निलंबित किया गया है और मामले की जांच के लिए मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए हैं। खड़गे ने कहा कि जिम्मेदार अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। हमारी सरकार ने किसी को बलि का बकरा नहीं बनाया है। भाजपा की आलोचना का जवाब देकर खड़गे ने पलटवार कर कहा कि भाजपा चाहती है कि सीएम, डीसीएम और गृह मंत्री इस्तीफा दें, इसके हिसाब से, योगी आदित्यनाथ इस्तीफा दे, पहलगाम हमले के लिए अमित शाह इस्तीफा दे, विदेश नीति की विफलता के लिए एस जयशंकर को इस्तीफा और पूरे देश को गुमराह करने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी को इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने सवाल किया कि क्या कुंभ मेले में भगदड़ नहीं मची? हमें यह भी नहीं पता कि कितने लोग मारे गए। हम कम से कम अपनी गलती स्वीकार कर रहे हैं और जिम्मेदारी ले रहे हैं... हम हताहतों की संख्या नहीं छिपा रहे हैं। उन्होंने माना कि राज्य सरकार बेहतर योजना बना सकती थी, हां, हम बेहतर योजना बना सकते थे और चीजों को बेहतर तरीके से कर सकते थे, और हम इस पर विचार कर रहे हैं...।

सरेंडर वाले राहुल के बयान पर सरमा ने खोल दिया, कांग्रेस का काला चिटठा

सरेंडर करने में नेहरू और इंदिरा गांधी सबसे आगे

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नरेंद्र सरेंडर कहने वाली कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की टिप्पणियों पर तीखा पलटवार किया। इस पर सीएम सरमा ने कड़ी प्रतिक्रिया देकर आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी का भारत के राष्ट्रीय हितों को आत्मसमर्पण करने का लंबा इतिहास रहा है। सीएम सरमा ने ऐतिहासिक घटनाओं का हवाला दिया और कांग्रेस नेताओं, विशेष रूप से पूर्व प्रधानमंत्रियों जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी पर भारत की संप्रभुता से समझौता करने और इसकी क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में विफल रहने का आरोप लगाया।

सीएम सरमा ने कहा कि कश्मीर संघर्ष के दौरान संयुक्त राष्ट्र से संपर्क करने के नेहरू के फैसले ने भारत की सैन्य प्रगति को रोक दिया, जिससे पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) का निर्माण हुआ। वैश्विक तुष्टिकरण की वेदी पर एक सैन्य जीत की बलि दी गई।

सीएम सरमा ने कहा कि नेहरू पर

चीन को बिना किसी प्रतिरोध के 38,000 वर्ग किलोमीटर भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करने की अनुमति देने का आरोप लगाया, उन्होंने कहा कि इससे असम और पूर्वोत्तर असुरक्षित हो गया। मैं असम के लोगों के लिए दुखी हूँ। क्या यह राजनेता था या राहुल गांधी का आत्मसमर्पण? असम लगभग कट गया था। पूरे पूर्वोत्तर को भाग्य पर छोड़ दिया गया था।

इतना ही नहीं सीएम सरमा ने युद्ध के बाद पीओके की वापसी या क्षतिपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बातचीत किए बिना 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों को रिहा करने के लिए इंदिरा गांधी की आलोचना की।

ऑपरेशन ब्लू स्टार की बरसी पर लगे स्वर्ण मंदिर में खालिस्तान समर्थक नारे

जसबीर सिंह ने कहा- हमेशा ही लगते रहे हैं नारे इसमें कुछ नया नहीं

अमृतसर (एजेंसी)। ऑपरेशन ब्लू स्टार की 41वीं बरसी पर स्वर्ण मंदिर में खालिस्तान समर्थक नारे लगे। शुक्रवार को सामने आए वीडियो में स्वर्ण मंदिर परिसर में उमड़ी भीड़ को 'खालिस्तान जिंदाबाद' का नारा लगाते सुना जा सकता है। यह नारे शिअद के नेता सिमरनजीत सिंह मान की मौजूदगी में लगाए गए। मामला सामने आने के बाद अकाल तख्त के पूर्व जत्थेदार जसबीर सिंह रोडे ने कहा है कि यह नारे हमेशा ही लगते रहे हैं और इसमें कुछ नया नहीं है।

उन्होंने कहा कि ये नारे यहां और दुनिया भर में हमेशा लगाए जाते रहे हैं। आज तक सरकार के पास इस बात का जवाब नहीं है कि सिखों के सबसे पवित्र स्थल पर हमला क्यों किया गया। सिख अपने अधिकारों की मांग कर रहे थे। फिर भी बिना किसी चेतावनी के हम पर हमला किया गया, जैसे दुश्मन देशों पर हमला किया जाता है।

भारतीय सेना ने खालिस्तानी समर्थकों पर एक्शन लेते हुए ऑपरेशन ब्लू स्टार लॉन्च किया था। 1 से 8 जून 1984 तक चले इस ऑपरेशन का उद्देश्य स्वर्ण मंदिर परिसर से भिंडरावाले के नेतृत्व वाले उग्रवादियों को मार गिराना था, लेकिन पंजाब का एक वर्ग इसे पवित्र स्वर्ण मंदिर में सैन्य एक्शन के रूप में देखता है।

इस बीच ऑपरेशन ब्लू स्टार की बरसी के मौके पर पंजाब को छावनी में बदल दिया गया। पंजाब पुलिस आयुक्त ने बताया कि शहर के एंट्री और एग्जिट के साथ-साथ अंदरूनी क्षेत्रों में कई चेकपॉइंट बनाए गए। अमृतसर के आसपास वाले शहरों में पुलिस अधिकारियों द्वारा विशेष रूप से स्वर्ण मंदिर के आसपास कड़ी सुरक्षा की गई और आने-

जाने वालों की कड़ी जांच की जा रही है। शहर की सुरक्षा के लिए करीब 4,000 पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

इस बीच सिख कट्टरपंथी समूह दल खालसा ने अकाल तख्त के कार्यवाहक जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंह गड़गज्ज द्वारा सर्वोच्च सिख धार्मिक पीठ के मंच से संबोधन देने पर आपत्ति जताई है, जिसके बाद एसजीपीसी, पुलिस और एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। दल खालसा ने गुरुवार देर शाम शहीदी मार्च निकाला। इसके अलावा दल खालसा की ओर से आज अमृतसर बंद बुलाया है।

राम मंदिर निर्माण में अब तक लग चुका है 50 करोड़ का सोना

अयोध्या। अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण में 45 किलोग्राम खरा सोने का इस्तेमाल किया गया, जिसकी कीमत करीब 50 करोड़ रुपए है। राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने शुक्रवार को बताया कि मंदिर में कुल 45 किलोग्राम खरा (24 कैरेट) सोने का इस्तेमाल किया गया है। बृहस्पतिवार को राम जन्मभूमि मंदिर के प्रथम तल पर भगवान राम, देवी सीता और भाई लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा राम भक्त हनुमान से सजे राम दरबार की पूरे विधि-विधान से प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। मिश्रा ने बताया कि मंदिर में इस्तेमाल किये गए सोने का अनुमानित मूल्य लगभग 50 करोड़ रुपये है। मंदिर के भूतल पर बने दरवाजों और भगवान राम के सिंहासन में बड़े पैमाने पर सोने का इस्तेमाल किया गया है। इसके अलावा, शेषावतार मंदिर में सोने का काम अब भी जारी है। उन्होंने बताया कि राम मंदिर के मुख्य ढांचे का निर्माण पूरा हो चुका है, लेकिन संग्रहालय, सभागार और अतिथि गृह समेत मंदिर परिसर के अन्य हिस्से अभी निर्माणाधीन हैं। इनका काम दिसंबर 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है।

अमेरिका में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने कहा, पाकिस्तान के प्रति कोई सहानुभूति नहीं, भारत के प्रति पूर्ण समर्थन

वाशिंगटन, एजेंसी। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व वाला भारतीय सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल अमेरिका दौरे पर है। अमेरिका में भारतीय सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने कहा है कि कई देशों में उसके साथ हुई बातचीत से यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तान के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है और सीमापार आतंकवाद पर भारत के रुख को लेकर वैश्विक समर्थन बहुत अधिक है। प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख और कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने बुधवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ÷हम हर देश में जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह यह है कि हम घटनाओं के बारे में अपना दृष्टिकोण, पिछले कुछ हफ्तों के अपने अनुभव को समझाएं, और उन लोगों की एकजुटता और समझ की कोशिश करें जिनसे हम मिलते हैं और बात करते हैं। उन्होंने कहा, ÷मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब तक हम जिन लोगों से मिले हैं, उन सभी ने न केवल भारत पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है और आतंकवाद के खिलाफ भारत के

आत्मरक्षा के अधिकार का भी स्पष्ट रूप से समर्थन किया है और ऐसी समझ का बहुत स्वागत किया गया है। थरूर ने पहलगाम आतंकवादी हमले को कश्मीर में आर्थिक और सामाजिक आशावाद के समय में एक गंभीर रुकावट बताया। उन्होंने कहा, ÷कश्मीर में तेजी से विकास हो रहा था। आम कश्मीरी भारी संख्या में पर्यटकों के आने से लाभान्वित हो रहे थे। उनको आर्थिक रूप से काफी अवसर मिल रहे थे। यह एक अच्छा समय था। कश्मीर में छुट्टियां मनाने आए पर्यटकों के एक मासूम समूह की निर्मम हत्या की जा रही है, लोग आकर उनसे उनका धर्म पूछ रहे हैं और उनकी आंखों की सामने गोली मार रहे हैं। उन्होंने कहा, ÷इसके बाद सरकार ने जो कुछ भी करने का निर्णय लिया, राष्ट्र ने एकजुट होकर उसका समर्थन किया। हममें से अधिकांश लोग जो चाहते थे, सरकार ने अंत में वहीं निर्णय लिया है। उन्होंने भारत की सुनियोजित सैन्य प्रतिक्रिया और युद्ध विराम के बारे में भी बताया।

एलन मस्क को ट्रंप का टैक्स कट्स और खर्च विधेयक पसंद नहीं आया, बताया-घिनौना अभिशाप

वाशिंगटन, एजेंसी। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पूर्व सहयोगी एलन मस्क को टैक्स कट्स और खर्च विधेयक पसंद नहीं आया। मस्क ने इसे घिनौना अभिशाप की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि अब बर्दाश्त से बाहर है। मस्क ने एक्स पर लिखा, ÷मैं इसे अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। ट्रंप की घरेलू प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया व्यापक नीतिगत विधेयक अपमानजनक और अश्लील है। सीबीएस न्यूज के अनुसार मस्क ने लिखा, जिन लोगों ने इसके पक्ष में वोट दिया, उन्हें शर्म आनी चाहिए। वह लोग जानते हैं कि उन्होंने गलत किया है। ऐसे लोगों ने अमेरिकी लोगों के साथ विश्वासघात किया है। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने इस आलोचना का जवाब दिया है। उन्होंने दैनिक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि ट्रंप पहले से ही जानते हैं कि इस विधेयक पर एलन मस्क का क्या रुख है। इससे राष्ट्रपति की राय नहीं बदलती। मस्क ने हाल ही में ÷सीबीएस संडे मॉर्निंग÷ को दिए साक्षात्कार में कहा कि वह इस विधेयक से निराश हैं। यह विधेयक पैकेज घाटे को बढ़ाता है और सरकारी दक्षता विभाग को कमजोर करता है। उन्होंने कहा कि यह विधेयक अच्छा और मनभावन हो सकता था। इस बीच कुछ

रिपब्लिकन सीनेटरों ने मंगलवार को मस्क की भावना का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि विधेयक अब सीनेट के हाथों में है। सदन में वापस जाने से पहले इसमें बदलाव होने की उम्मीद है। केंटकी के सीनेटर रैंड पॉल ने कहा कि राष्ट्रपति को इस संबंध में मस्क से सलाह लेनी चाहिए।विस्कॉन्सिन के सीनेटर रॉन जॉनसन ने कहा कि विधेयक में बदलाव होना चाहिए। वह मस्क की चिंता का समर्थन करते हैं। जॉनसन ने कहा, मुझे बहुत खेद है कि उन्होंने यह गलती की है।÷ यूटा के सीनेटर माइक ली ने कहा कि सीनेट को इस विधेयक को बेहतर बनाना होगा।

अमेरिकी कांग्रेस की बैठक में भारत को पूर्ण समर्थन और एकजुटता : मिली : थरूर

वाशिंगटन, एजेंसी। भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को अमेरिकी सांसदों से मुलाकात की और कहा कि आतंकवाद से लड़ने में भारत को उनसे पूर्ण समर्थन और एकजुटता मिली है। यह बात कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कही, जो प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, हमारे पास एक भी संदेहपूर्ण या नकारात्मक आवाज नहीं थी। इसके विपरीत, हमें जो मिला वह बहुत ही सकारात्मक प्रतिक्रिया थी। उन्होंने कहा कि भारत और आतंकवाद के खिलाफ उसकी लड़ाई के प्रति पूर्ण समर्थन और एकजुटता थी और आतंकवाद के खिलाफ भारत के आत्मरक्षा के अधिकार के प्रति पूर्ण समझ व्यक्त की गई। आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता का संदेश देने तथा ऑपरेशन सिंदूर के औचित्य को समझाने के अपने मिशन पर, टीम थरूर ने कांग्रेस के इंडिया कॉकस; सदन की विदेश मामलों की समिति के सदस्यों, जिनमें दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया उपसमितियों के दो अध्यक्ष शामिल थे, तथा छह सीनेटरों के एक समूह से मुलाकात की, जिनमें से पांच विदेश संबंध समिति के तथा एक खुफिया समिति के सदस्य थे। थरूर की बात को प्रतिनिधिमंडल से मिलने वाले कांग्रेस सदस्यों ने भी दोहराया। इंडिया कॉकस के सह-अध्यक्ष, डेमोक्रेट प्रतिनिधि रो खन्ना ने एक्स पर पोस्ट किया, 22 अप्रैल के हमलों के लिए जिम्मेदार आतंकवादी समूहों को खत्म करने के महत्व पर अमेरिका-भारत ने चर्चा की÷, पहलगाम में 26 निर्दोष लोग मारे गए थे। रिपब्लिकन सीनेटर डेव मैककॉर्मिक ने एक्स पर कहा कि सीनेट की विदेश संबंध समिति के सदस्यों के साथ बैठक में,

÷हमने अमेरिका और भारत के बीच साझा मूल्यों, आतंकवाद से लड़ने और सत्तावादी राज्यों के खिलाफ़ प्रतिरोध पर चर्चा की, साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भविष्य के निर्माण के लिए अपने आर्थिक संबंधों का विस्तार किया। मैककॉर्मिक दक्षिण एशिया, मध्य एशिया और आतंकवाद प्रतिरोध पर सीनेट की विदेश संबंध उपसमिति के प्रमुख हैं। प्रतिनिधि ग्रेगरी मीक्स, जो सदन की विदेश मामलों की समिति के शीर्ष डेमोक्रेट हैं, उन्होंने थरूर को विदेश मामलों पर भारत की संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष के रूप में बधाई दी। उन्होंने एक्स पर कहा, मैंने और मेरे सहयोगियों ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले पर संवेदना व्यक्त की तथा अमेरिका-भारत साझेदारी के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की। थरूर ने संवाददाता सम्मेलन में कहा, मोटे तौर पर कहें तो हम बातचीत की गुणवत्ता और रुचि के स्तर से बहुत प्रसन्न होकर लौटे हैं। वाशिंगटन आने से पहले, टीम थरूर ने गुयाना, पनामा, कोलंबिया और ब्राजील का दौरा किया था।

हर्षवर्धन दीवानियत के अंतिम शेड्यूल के लिए तैयार

अभिनेता हर्षवर्धन राणे अपनी फिल्म एक दीवाने की दीवानियत के आखिरी शेडयूल की शूटिंग के लिए पूरी तरह तैयार हैं। शूटिंग अगले हफ्ते से शुरू हो जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने जुलाई में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक ओमंग कुमार के साथ अपनी अगली सोलो फिल्म शुरू करने को लेकर भी उत्साह जताया है। हर्षवर्धन राणे ने इंस्टाग्राम पर अपनी दो तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वह स्विमिंग पूल के पास खड़े नजर आ रहे हैं। इन तस्वीरों में वह सफेद बिना बाजू की शर्ट, काली कार्गो पैंट और सनग्लास पहने हुए हैं। वह इन कपड़ों में काफी स्टाइलिश दिख रहे हैं। हर्षवर्धन ने लिखा, अगले हफ्ते दीवानियत की आखिरी शूटिंग चरण का इंतजार है और एक महीने बाद राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक ओमंग कुमार सर के साथ अपनी अगली एकल फिल्म शुरू करने को लेकर बहुत उत्साहित हूं। आज शाम तक और जानकारी दूंगा!

अगर बात करें 'एक दीवाने की दीवानियत' की तो इस फिल्म में हर्षवर्धन राणे के साथ सोनम बाजवा भी नजर आएंगी। यह फिल्म दशहरे पर रिलीज की जाएगी। 27 मई को फिल्म का पोस्टर जारी किया गया था, जिसमें मुख्य जोड़ी के बीच गहरी भावना और केमिस्ट्री दिखाई गई थी। यह फिल्म प्यार, भावनाओं और ड्रामा से भरी कहानी का वादा करती है। अभिनेताओं ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का पोस्टर साझा करते हुए कैप्शन में लिखा, 2 अक्टूबर 2025, गांधी जयंती और दशहरे के मौके पर सिनेमाघरों में दिखेगी मोहब्बत, नफरत और एक दीवाने की दीवानियत की कहानी! यह फिल्म प्यार, जुनून और दिल टूटने जैसी गहरी भावनाओं को दिखाती है। अगर ओमंग कुमार की इस आने वाली फिल्म की बात करें, तो इसमें सादिया खतीब और करण वीर मेहरा भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। ओमंग कुमार दमदार फिल्में बनाने के लिए जाने जाते हैं, और हर्षवर्धन की जबरदस्त अभिनय शैली के साथ यह फिल्म एक शानदार सिनेमाई अनुभव का वादा करती है। उम्मीद है कि फिल्म की शूटिंग इस साल के अंत तक शुरू हो जाएगी। इस फिल्म को ओमंग कुमार के साथ मिलकर उमेश के.आर. बंसल, प्रगति देशमुख, हिमांशु तिवारी, अजय सिंह, धनंजय सिंह, अभिषेक अंकुर और कैप्टन राहुल बाली प्रोड्यूस कर रहे हैं। वहीं राहत शाह काजमी इस फिल्म के सह-निर्माता हैं। हर्षवर्धन ने अपने करियर की शुरुआत 2007-2008 में टेलीविजन शो लेफ्ट राइट लेफ्ट में एक छोटे से रोल से की थी।

मिस वर्ल्ड का मिशन सिर्फ तारीफ बटोरना नहीं, समाज में बदलाव लाना भी है

पूर्व मिस वर्ल्ड मानुषी छिल्लर ने खिताब जीतने से लेकर मिस वर्ल्ड मंच पर जज बनने तक के अपने शानदार सफर के बारे में बातचीत की। अभिनेत्री का मानना है कि मिस वर्ल्ड का मिशन सिर्फ तारीफ बटोरना नहीं है, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाना भी है। अभिनेत्री ने बताया, 'ब्यूटी विद ए पर्पस' मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता का मूल मंत्र है, यानी सिर्फ बाहरी सुंदरता नहीं, बल्कि एक बड़े मकसद के लिए काम करना। वह बताती हैं कि जब वह 20 साल की थीं, तब उन्होंने इस मंच पर हिस्सा लिया था। उनके पास एक सपना और एक प्रोजेक्ट था, जिसे उन्होंने वहां पेश किया। 'ब्यूटी विद ए पर्पस' ही मिस वर्ल्ड की आत्मा है। यहां जितने भी लोग आते हैं, उनकी आंखों में भी सपने होते हैं।

प्रतियोगिता से जुड़ी बातों को शेयर करते हुए उन्होंने बताया, आज भी मुझे वो शब्द याद हैं कि 'क्या अंधेरे में एक दीया जलाना, बिल्कुल न देखने से बेहतर नहीं है? मैं बस यही कहना चाहती हूं कि यही मिस वर्ल्ड का मिशन है। जब हम इन सभी अद्भुत महिलाओं को मंच पर देखते हैं, तो गर्व होता है। वे केवल प्रशंसा के लिए नहीं आई हैं। वे यहां बदलाव की चिंगारी जलाने आई हैं। उन्होंने बताया, मिस वर्ल्ड का मिशन यही है कि ये प्रतियोगी सिर्फ तारीफ बटोरने नहीं आतीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए काम करती हैं। वे अपने विचारों और प्रोजेक्ट्स के जरिए दुनिया में एक नई रोशनी फैलाने की कोशिश करती हैं। मानुषी छिल्लर ने साल 2017 में मिस वर्ल्ड का खिताब जीता था। उन्होंने फेमिना मिस इंडिया 2017 प्रतियोगिता में हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया, जहां उन्होंने फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड का ताज जीता। मानुषी ने पीरियड ड्रामा 'सम्राट पृथ्वीराज' से अभिनय जगत में डेब्यू किया था, जिसमें उन्होंने संयोगिता का किरदार निभाया था। इसके बाद वह कॉमेडी-ड्रामा 'द ग्रेट इंडियन फैमिली' और एक्शन ड्रामा 'बड़े मियां छोटे मियां' में दिखाई दीं। मानुषी छिल्लर 'तेहरान' समेत कई अपकमिंग प्रोजेक्ट्स का हिस्सा हैं।

ओटीटी से आज भी दूरी बनाए हुए हैं ये सितारे, डिजिटल डेब्यू को लेकर नहीं दिखाई दिलचस्पी

मनोरंजन की दुनिया में ओटीटी एक बड़ा प्लेटफॉर्म बनकर उभरा है। कितने ही सितारे जो बड़े परदे पर गुमनाम रहे, ओटीटी ने उन्हें सुपरस्टार बना दिया। कई नामी सितारे भी बड़े उत्साह के साथ ओटीटी फिल्मों में काम कर रहे हैं। मगर, कई सितारे ऐसे हैं, जो अब भी ओटीटी से कोसों दूर हैं।

जॉन अब्राहम

अभिनेता जॉन अब्राहम अब तक ओटीटी से दूर हैं। यहां डेब्यू को लेकर उन्हें कोई दिलचस्पी भी नहीं। हाल ही में उन्होंने इस बारे में बात करते हुए साफ कहा कि वे बड़े परदे के एक्टर हैं। जॉन का कहना है, मेरे दिमाग में, मुझे लगता है कि मैं बड़े पर्दे के लिए बना हूं। उन्होंने कहा, मैं अभी वेब सीरीज नहीं करना चाहता। हालांकि, इसमें कोई दोराय नहीं कि अगर बढ़िया कहानी मिलती है, जो मुझे वाकई में पसंद आएगी, तो मैं वेब सीरीज जरूर बनाऊंगा। एक्टर के वर्क फ्रंट की बात करें तो वे राकेश मारिया की बायोपिक कर रहे हैं।

सलमान खान-आमिर खान

बॉलीवुड के भाईजान सलमान खान भी ओटीटी से दूर हैं। वे सिनेमाघरों के बादशाह बने हुए हैं। इसी तरह बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान भी डिजिटल प्लेटफॉर्म से दूर हैं। इनके ओटीटी डेब्यू की कोई जानकारी नहीं हैं। हालांकि, अब तक ओटीटी से दूर रहे शाहरुख खान ओटीटी डेब्यू करने वाले हैं। वे अपने बेटे आर्यन द्वारा निर्देशित सीरीज में नजर आएंगे, ऐसी खबर है।

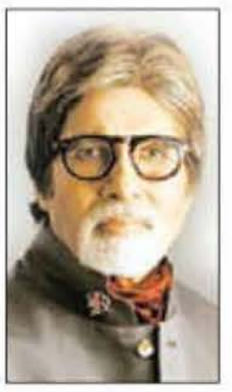

अमिताभ बच्चन

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन बड़े परदे के शहंशाह हैं। ओटीटी पर भी उनके डेब्यू का दर्शक इंतजार कर रहे हैं। मगर, बिग बी ने इस प्लेटफॉर्म से अब तक दूरी बना रखी है। देखना दिलचस्प होगा कि वे कब इस प्लेटफॉर्म पर डेब्यू करते हैं।

सोनू सूद

सोनू सूद का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है। हालांकि, बतौर निर्माता वे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर डेब्यू कर चुके हैं। मगर, बतौर एक्टर उन्होंने अभी ओटीटी का रुख नहीं किया है।

अगले साल अक्टूबर में आएगी अजय देवगन स्टारर दृश्यम 3

जय देवगन इन दिनों फिल्म रेड 2 की सफलता का जश्न मना रहे हैं। उनकी यह फिल्म पहले दिन से ही बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। आने वाले समय में अजय एक से बढ़कर एक फिल्मों में नजर आएंगे। अब उनकी क्राइम थ्रिलर फ्रेंचाइज दृश्यम की तीसरी किस्त का ऐलान हो गया है, जिसके निर्देशन की कमान जाने-माने निर्देशक अभिषेक पाठक ने संभाली है। इसके साथ फिल्म की रिलीज डेट भी सामने आ गई है।

अजय और अभिषेक की यह फिल्म अगले साल गांधी जयंती के अवसर पर यानी 2 अक्टूबर 2026 को दर्शकों के बीच आएगी। अजय बड़े परदे पर एक बार फिर विजय सलगांवकर के रूप में वापसी करने के लिए तैयार हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो इस फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम जारी है। दृश्यम 3 की शूटिंग शुरू करने से पहले अजय दे दे प्यार दे 2, धमाल 4 और रेंजर की शूटिंग पूरी करेंगे। दे दे प्यार दे 2 की शूटिंग तो पिछले काफी समय से जारी है। बता दें कि इस फिल्म में अजय के साथ रकुल प्रीत सिंह भी लीड रोल में हैं।

जिंदगी में कभी भी बिग बॉस का नहीं हिस्सा नहीं बनूंगी

टीवी एक्ट्रेस चाहत खन्ना पिछले कुछ समय से लगातार अपने इंटरव्यू को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। इंटरव्यू में वो खुलकर कास्टिंग काउच और पैसे नहीं मिलने जैसे मुद्दे पर बात कर रही हैं। अब चाहत ने सलमान खान के शो बिग बॉस को लेकर कहा कि वो उस शो का कभी हिस्सा नहीं बनेंगी। हाल ही में एक इंटरव्यू में उनसे पूछा गया कि अगर उन्हें बिग बॉस से ऑफर आए तो वो शो में जाएंगी? इस सवाल के जवाब में चाहत कहती हैं- बिग बॉस का ऑफर तो हर साल एक्टर्स को आता है। शायद कभी कोई हां बोले दे लेकिन मैं तो कभी ना जाऊं। मुझे मौका मिले तो कुएं में कूद जाऊं लेकिन बिग बॉस में नहीं जाऊंगी। मैं जानती हूं वो कितना षडयंत्र रचकर बैठे हैं। मेरे पास्ट की धज्जियां उड़ा देंगे। अगर खाने को पैसे नहीं हुए तो मैं कहीं जॉब कर लूंगी लेकिन जिंदगी में कभी बिग बॉस नहीं जाऊंगी।

चाहत की करियर की बात करें तो वो बड़े अच्छे लगते हैं और कबूल हैं जैसे हिट शो क हिस्सा रही हैं। हालांकि, अब वो कम ही छोटे पर्दे पर नजर आती हैं। इसके पीछे की वजह एक्ट्रेस ने बताया कि कोई उनके साथ काम नहीं करना चाहता है। उन्होंने इंडस्ट्री में तलाक को लेकर बन चुकी सोच को लेकर बात की। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग उनके साथ काम नहीं करना चाहते हैं। बता दें कि एक्ट्रेस का दो बार तलाक हो चुका है। उनकी पहली शादी ज्यादा लंबी नहीं चली थी। महज 4 महीने के अंदर ही उन्होंने तलाक ले लिया था। फिर उन्होंने अपनी जिंदगी की नई शुरुआत की और दोबारा शादी की, लेकिन वह शादी भी लंबे समय तक नहीं चली और तलाक हो गया। चाहत कहती हैं कि तलाक और सेपरेशन कभी भी आसान नहीं होते, खासकर तब जब बच्चे हों।

'हीरामंडी' के बाद अध्ययन सुमन के लिए नहीं खुले दरवाजे

संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज 'हीरामंडी' से मिली जबरदस्त तारीफ के बाद भी इंडस्ट्री का वैसा साथ ना मिलना, जैसा उम्मीद थी लेकिन अध्ययन सुमन ने हार नहीं मानी। अमर उजाला डिजिटल से बातचीत में उन्होंने अपने संघर्ष, फैसलों और फिल्मों के बजट की हकीकत से पर्दा उठाया। जानिए कैसे उन्होंने मुश्किलों का सामना किया और इंडस्ट्री के हालात पर क्या कहा।

'सच कहूं तो, मुझे लगा था 'हीरामंदी' के बाद सब कुछ बदल जाएगा। इतना प्यार और तारीफ मिली, मेरे सीन भी खूब वायरल हुए, लेकिन इंडस्ट्री से वैसा रिस्पॉन्स नहीं मिला जैसा मैंने सोचा था। अब एक साल से ऊपर हो गया है, लेकिन आज तक मुझे वो फिल्में नहीं मिलीं जो मिलनी चाहिए थीं। ये बात दिल को थोड़ा चुभती है। जब दिल से मेहनत करो और ऑडियंस भी तुम्हें पसंद करे, तो उम्मीद होती है इंडस्ट्री भी साथ देगी। इस साल मेरी तीन फिल्में हैं। दो वो जो पहले से शूट हुई थीं और एक नया प्रोजेक्ट जो 'हीरामंदी' के बाद साइन किया है। वो खास है। लेकिन सच कहूं तो फोन कॉल्स कम हो गए हैं, दरवाजे कम खुले हैं, मिलने वाले कम हुए हैं। ये मेरे लिए बड़ा सच सामने आना जैसा है।'

कभी ऐसा लगा कि सब कुछ छोड़ दूं?

'हां, एक दिन ऐसा जरूर आया जब लगा कि सब खत्म हो गया। लेकिन उसी दिन मैंने मन बनाया कि जो लोग मेरी हार देखना चाहते हैं, उन्हें मौका नहीं दूंगा। मैंने अपने सबसे मुश्किल वक्त से खुद को निकाला। मेरे लिए सफलता पैसे या हिट-फ्लॉप नहीं है। सफलता है- ईमानदार रहना, चाहे वक्त कैसा भी हो। मैं खुद को आज दुनिया का सबसे सफल इंसान मानता हूं क्योंकि मैं टूटा, लेकिन चलता रहा। काम मिलता रहे, यही दुआ है मेरी।'

क्या आपके पिता, शेखर सुमन जी ने कभी आपके करियर के फैसलों में दखल दिया?

'जब मैंने पापा से कहा था कि मैं 'हाल-ए-दिल' से डेब्यू करना चाहता हूं, तो उन्होंने कहा, 'ये तुम्हारे लिए सही शुरुआत नहीं है। मैं तुम्हें लॉन्च नहीं कर सकता क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं हैं। लेकिन अगर तुम करना चाहते हो, तो ये फैसला तुम्हारा है। बाद में आकर रोना मत और जब मैं फिल्म के सेट पर पहुंचा, पहला फोन पापा को किया था। मैंने कहा, 'पापा, ये मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा गलत फैसला है। तो पापा बोले, अब तू कूद चुका है समुंदर में, तो खुद तैरना पड़ेगा। प्रोड्यूसर ने पैसे लगा दिए हैं, अब पीछे हटना मुश्किल है। मैं उन्हीं की वजह से आज भी मजबूत हूं क्योंकि उन्होंने मुझे कभी स्पेशल ट्रीटमेंट नहीं दिया, बल्कि मेरी लड़ाई खुद लड़ने दी।'

कभी लगा कि कुछ फैसले जल्दीबाजी में कर लिए?

'सच कहूं, 'हाल-ए-दिल' साइन करने के बाद आज भी सोचता हूं कि इतनी जल्दी क्यों कर लिया। न्यू यॉर्क फिल्म एकेडमी से डायरेक्शन का कोर्स किया था, बस जल्दी काम शुरू करना चाहता था। उस वक्त कोई खास रोल नहीं देखा, बस काम करना था। अब सोचता हूं कि इंतजार कर सकता था, कोई बेहतर कहानी या रोल मिलने का इंतजार कर सकता था। पर वही गलती मुझे तोड़ा और फिर मजबूत भी बनाया।'

बीच में की गई फिल्मों के बारे में क्या सोचते हैं?

कुछ फिल्में ऐसी भी कीं, जिन्हें दिल से नहीं करना चाहिए था। 2014 की एक फिल्म थी, मुझे पता था ये सही नहीं है, लेकिन काम नहीं मिलता था, तो इंसान डेस्परेट हो जाता है। जो भी मौका मिलता, पकड़ लेना पड़ता था। लेकिन अब वो दौर खत्म हो चुका है। अब मैं सिर्फ वही काम करूंगा जिसमें दिल और आत्मा हो, मजबूरी नहीं। कोई ऐसा पल जो हमेशा दिल में बस गया हो - जब आपके पापा ने गर्व से आपको देखा हो? शायद पहली फिल्म में नहीं, लेकिन एक खास मौका था, जब भंसाली साहब ने मेरे पापा को फोन किया था। मेरे लिए वो पल बहुत खास था।

आजकल फिल्मों के बजट 500 से 1000 करोड़ तक पहुंच गए हैं, क्या इंडस्ट्री को इतना फायदा हो रहा है?

'असलियत ये है कि बड़े बजट का आधा हिस्सा एक्टर्स, उनके स्टाफ और मैनेजमेंट में चला जाता है। मेकअप आर्टिस्ट और टीम को इतना पैसा मिलता है कि असली प्रोडक्शन, स्क्रिप्ट और सिनेमैटोग्राफी पर कम पड़ जाता है। इसलिए कई फिल्में उम्मीद के मुताबिक सफल नहीं हो पातीं। अगर पैसा सही जगह, जैसे स्क्रिप्ट और तकनीशियनों पर लगाया जाए, तो नतीजे बेहतर हो सकते हैं। फिलहाल इंडस्ट्री घाटे में है और बिजनेस सही नहीं चल रहा। नए टैलेंट को मौके मिलते हैं, लेकिन वे कम हैं, जबकि कई बार एक ही शख्स को कई फ्लॉप प्रोजेक्ट्स के बाद भी मौका मिलता रहता है। ये एक बड़ा मुद्दा है, जिस पर इंडस्ट्री को सोचने की जरूरत है।

गौतमबुद्धनगर में 9 जून तक धारा 163 लागू

नोएडा (चेतना मंच)। गौतमबुद्धनगर जिले में कई प्रकार के आयोजनों को देखते हुए धारा 163 लागू कर दी गई है। आज 7 जून को ईद उल जुहा त्योहार और अलग-अलग संगठनों की ओर से आयोजित धरना प्रदर्शन को देखते हुए गौतमबुद्धनगर कमिश्नरेट की ओर 7 जून से 9 जून तक बीएनएस की धारा 163 (पूर्व में धारा 144) लागू की गई है।

इसका प्रभाव अगले 3 दिनों तक रहेगा। इस दौरान गौतमबुद्धनगर में चप्पे-चप्पे पर पुलिस की निगरानी होगी। जिले में इस अवधि में धरना-प्रदर्शन पर पाबंदी लगाई गई है। माहौल खराब करने वालों पर भी पुलिस की पैनी नजर रहेगी। धारा 163 के तहत लागू निषेधाज्ञा अवधि में बिना अनुमति पांच या इससे अधिक लोगों का जुटान नहीं हो सकेगा। इसके साथ ही जुलूस परभी पाबंदी रहेगी। प्रशासन के अनुमति से ही कोई कार्यक्रम या जुलूस का आयोजन हो सकेगा।

रोड को जोड़ने के लिए 80 मीटर रोड का निर्माण शुरू

वाहन चालकों को 60 मीटर से 130 मीटर रोड पर आवाजाही होगी आसान

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने ग्रेटर नोएडा और ग्रेटर नोएडा वेस्ट को जोड़ने के लिए 80 मीटर चौड़ी रोड का निर्माण शुरू करा दिया है। रोड की जमीन को लेकर विवाद के चलते यह रोड नहीं बन पा रही थी, लेकिन प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार की पहल पर किसानों से वार्ता के जरिए इस अवरोध को खत्म कर रोड का निर्माण शुरू करा दिया गया है। इस रोड के बनने से सेक्टर-3 के पास 60 मीटर रोड से नॉलेज पार्क-5 के पास 130 मीटर रोड पर आना-जाना आसान हो जाएगा। 60 मीटर रोड पर ट्रैफिक का दबाव कम हो जाएगा। समय और ईंधन की भी बचत होगी।

सीईओ एनजी रवि कुमार के निर्देश पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ग्रेनो वेस्ट में ट्रैफिक जाम को खत्म करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रहा है। प्राधिकरण ग्रेटर नोएडा वेस्ट में अंडरपास, यूटर्न और सड़कों का चौड़ीकरण करा रहा है। इसके साथ ही प्राधिकरण के परियोजना विभाग के वर्क सर्कल तीन ने 60 मीटर रोड और 130 मीटर रोड को जोड़ने के लिए 80 मीटर रोड का निर्माण शुरू करा दिया है।

एसीईओ प्रेरणा सिंह ने बताया कि ग्रेटर नोएडा और ग्रेटर नोएडा वेस्ट को जोड़ने वाली 60 मीटर रोड पर ट्रैफिक का दबाव अधिक है। इसे कम करने के लिए सेक्टर-3 के पास 60 मीटर रोड से नॉलेज पार्क-5 के पास 130 मीटर रोड तक 80 मीटर चौड़ी रोड का निर्माण किया जा रहा है। इसकी लंबाई लगभग 2200 मीटर है। इसे बनाने में करीब 10 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मानसूनी बारिश शुरू होने से पहले इसे पूरा करने का लक्ष्य है। इस रोड के बन जाने से ग्रेटर नोएडा व ग्रेनो वेस्ट के बीच सफर करने वालों को बड़ी राहत मिल जाएगी।

एसीपी से मिले डीडीआरडब्ल्यूए व एमएसएमई के पदाधिकारी

नोएडा (चेतना मंच)। डीडीआरडब्लूए अध्यक्ष एनपी सिहं के नेतृत्व मे डीडीआरडब्लूए टीम व एमएसएमई अध्यक्ष सुरेन्द्र नाहटा ने टीम के साथ नवनियुक्त एसीपी 2 नोएडा स्वतन्त्र सिंह से उनके कार्यालय मे औपचारिक मुलाकात की।

इस दौरान उन्होंने नोएडा मे अच्छी कानून व्यवस्था व किरायेदार, सिक्योरिटी गार्ड, घरेलू नौकर, सहायक के सत्यापन, सैक्टरों में कैमरे के लगवाने एवं पुलिस की आरडब्लूए के साथ मीटिंग कर सहयोग लेने देने के सम्बन्ध मे चर्चा की। इस मौके पर पूरी तरह से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

इस मौके पर डीडीआरडबलूए अध्यक्ष एनपी सिंह, उपाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह ,उपाध्यक्ष अनिल खन्ना, महीपाल सिंह, विजय रतूडी , एम एस एम ई अध्यक्ष सुरेन्द्र नाहटा व उनके साथ एक दर्जन उद्यमी भी मौजूद थे।

विनय कटियार ने भाजपा नेता की दादी को दी श्रद्धांजलि

नोएडा (चेतना मंच)। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं हिंदुत्व के प्रखर प्रवक्ता विनय कटियार सेक्टर-108 पहुँचे। उन्होंने भाजपा नेता व भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश सह मीडिया प्रभारी अमित त्यागी के आवास पर पहुंचकर उनकी स्वर्गवासी दादी को पुष्पांजलि अर्पित की तथा शोक संतप्त परिवार से भेंट कर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की।

विनय कटियार ने इस अवसर पर परिवारजनों के साथ कुछ समय व्यतीत किया और उन्हें इस कठिन समय में धैर्य एवं संबल प्रदान किया। विनय कटियार ने इस दौरान उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय जनों के साथ अपने अयोध्या राम मंदिर आंदोलन से जुड़े प्रेरणादायी अनुभव भी साझा किए।

इस दौरान भाजपा नेता विनोद त्यागी, ईश्वर चंद्र त्यागी, दयानंद त्यागी, बृजमोहन, सेक्टर-108 अध्यक्ष विनोद शर्मा, सहदेव गुरु जी, ठाकुर उज्जवल सिंह, राहुल शर्मा, जीतू शर्मा, नरेंद्र त्यागी, अमन ठाकुर आदि उपस्थित रहे।

नोएडा मीडिया क्लब के सदस्यों ने की पुलिस कमिश्नर से मुलाकात

नोएडा (चेतना मंच)। मीडिया क्लब की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और वरिष्ठ पत्रकारों के प्रतिनिधिमंडल ने गौतमबुद्ध नगर की पुलिस कमिश्नर श्रीमति लक्ष्मी सिंह से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान पुलिस कमिश्नर ने नोएडा मीडिया क्लब के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं।

इस दौरान श्रीमति लक्ष्मी सिंह ने कहा कि नोएडा की मीडिया पर प्रदेश ही नहीं पूरे देश की निगाहें रहती हैं। ऐसे में नोएडा मीडिया क्लब को सबके लिए आदर्श पेश करते हुए समाज के हित में पत्रकारिता करनी चाहिए। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल से कहा कि गौतमबुद्धनगर का पुलिस प्रशासन सदैव उनके साथ है और मीडिया क्लब के जरिए पदाधिकारियों और वरिष्ठ पत्रकारों को आदर्श स्थापित करते हुए मीडिया क्लब के सदस्य पत्रकारों के हितों के लिए भी काम करना चाहिए और नोएडा मीडिया क्लब को प्रदेश ही नहीं बल्कि देश का भी सबसे उत्कृष्ट मीडिया क्लब बनाने की दिशा में काम करना चाहिए।

मुलाकात के दौरान पुलिस कमिश्नर श्रीमति लक्ष्मी सिंह ने प्रतिनिधिमंडल से कहा की लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नोएडा मीडिया क्लब प्रदेश सरकार की योजनाओं और नीतियों को नियमित रूप से आम जन तक पहुंचाने का कार्य करेगा,साथ ही मीडिया क्लब के माध्यम से पुलिस विभाग द्वारा सामाजिक और शहरवासियों के हित के किए जा रहे कार्यों को भी प्रचारित किया जाएगा। भेंट के दौरान पुलिस कमिश्नर ने पुलिस विभाग और पत्रकारों के बीच आपसी सामंजस्य और बेहतर करने के संवाद समारोह आयोजित किए जाने का प्रस्ताव भी प्रतिनिधिमंडल के समक्ष रखा।

मीडिया क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी के नेतृत्व में उपाध्यक्ष अमित चौधरी,महासचिव जय प्रकाश सिंह,सचिव जगदीश शर्मा,कोषाध्यक्ष मनोज वत्स एवं वरिष्ठ पत्रकार संतोष कुमार सिंह,धर्मेंद्र चंदेल,सुरेश चौधरी,दानिश अजीज, भूपेंद्र चौधरी आदि ने पुलिस कमिश्नर श्रीमति लक्ष्मी सिंह से मुलाकात की।

एमिटी विवि. कॉपीराइट फाइलर्स के लिए सम्मानित

नोएडा (चेतना मंच)। एमिटी विश्वविद्यालय को भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) एंव पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक कार्यालय के तहत कॉपीराइट कार्यालय द्वारा देश में शीर्ष कॉपीराइट फाइलर्स में से एक होने के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान नई दिल्ली में कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के लागू होने के 68वें वर्ष के अवसर पर 'डिजिटल युग में कॉपीराइट अधिनियम में सुधार' थीम पर आयोजित एक कार्यक्रम में भारत सरकार के पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक प्रोफेसर उन्नत पी। पंडित द्वारा एमिटी साइंस टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन फांउडेशन के अध्यक्ष डा डब्लू सेल्वामूर्ती को प्रदान किया गया। विदित हो कि पंजीकरण प्रक्रिया के डिजिटलीकरण के बाद से 3।5 लाख से अधिक कॉपीराइट पंजीकृत किए गए हैं।

एमिटी विश्वविद्यालय के पास एक विविध आईपी पोर्टफोलियो है, जिसमें 758 से अधिक कॉपीराइट आवेदनों और 654 से अधिक कॉपीराइट पंजीकृत, 2445 से अधिक दायर पेटेंट आवेदनों का प्रभावशाली कॉपीराइट पोर्टफोलियो शामिल है, जिनमें से 430 से अधिक से अधिक पेटेंट हाल ही में दिए गए हैं। भारत सरकार ने पेटेंट फाइलिंग, अनुदान और व्यावसायीकरण के लिए शीर्ष भारतीय शैक्षणिक संस्थान की श्रेणी के तहत राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा पुरस्कार-2020 प्रदान करके अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में एमिटी की असाधारण उपलब्धियों को मान्यता भी दी है।

एमिटी शिक्षण समूह के संस्थापक अध्यक्ष डॉ अशोक के चौहान ने कहा कि एमिटी विश्वविद्यालय एक शोध और नवाचार संचालित विश्वविद्यालय है और आईपीआर पर जोर देती है जो शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करने, एक प्रगतिशील आईपी पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करने और सामाजिक लाभ के लिए इसका लाभ उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एमिटी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं, महत्वपूर्ण क्षेत्रों और पहलों के साथ सहजता से जु?ती है, महत्वाकांक्षी उद्यमियों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों के लिए एक जीवंत मंच प्रदान करती है, एक दूसरे के साथ सहयोग करने, अपने नेतृत्व और उद्यमशीलता कौशल को बढ़ाने और नवाचारों को साझा करने के लिए, जिससे भारत के भविष्य के नेताओं के लिए एक मजबूत नींव रखी जा सके, सामाजिक-आर्थिक विकास और राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाया जा सके। इस अवसर दिल्ली के कॉपीराइट कार्यालय प्रमुख और ट्रेड मार्क्स, भौगोलिक संकेत की डिप्टी रजिस्ट्रार, डॉ। पृथपाल कौर सिद्धू, भारत सराकर के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, के डीपीआईआईटी की निदेशक (आईपीआर) सुश्री सिमरत कौर, अंतर्राष्ट्रीय ट्रेडमार्क एसोसिएशन, दक्षिण एशिया के अंकित साहनी और दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय के प्रो अश्विनी सिवाल, राणा एंड राणा के आईपीआर अटॉर्नी, डा विक्रांत राणा, और एमिटी विश्वविद्यालय के एडिशनल प्रो वाइस चांसलर डा चंद्रदीप टंडन उपस्थित थे।

दैनिक चेतना मंच

भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।

डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99

RNI No. 69950/98

स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने M/s Sai Printing Press, डी-85 सेक्टर-6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया। संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी

Contact:
0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

SAHARA BUILDER & PROPERTIES™
ISO 9001:2008
PROPERTIES AVAILABLEFORSALE IN GREATER NOIDA

RESIDENTIAL

S.No	Plot Size	House No./Block	Price	Other Details
1	300 Sq.mtr	C-291, Sigma - 02	92 Lakh	Completion, S/W
2	200 Sq.mtr	G-660, Alpha - 02	1.25 Cr.	Completion,N/E & 18 MTR Road
3	60 Sq.mtr	G-439, Gamma - 02	52 Lakh	Single Story, Corner(18X12),N/E
4	1265 Sq.ft	Silver City - 02, PI-1	55 Lakh	2+1 BHK Apartment
5	29.76 Sq.ft	3TF/Block-60, Sector - 10	9 Lakh	1 BHK, Top Floor
6	2450 Sq.ft	Royal Apartment(Duplex), Sigma - 04	On Request	4BHK, Low rise, Lift
7	237 Sq.mtr	C-363, Sector - 03(EXTN)	1.40 Cr.	50% Completion, Corner, N/ W
8	110 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
9	131 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
10	930 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	14000/Sq.Mtr.	Corner Plot

COMMERCIAL

S.No	Shop Size	Complex Address	Price	Other Details
1	29.5 Sq.mtr	Block - C, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, Corner, N/E
2	463 Sq.ft	NQI Plaza, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, N/E
3	19.5 Sq.mtr	Kadamba Shopping Complex, Gamma -01	40 Lakh	G.Floor, N/W
4	8.15 Sq.mtr	Kiosk, P-3	22 Lakh	24 Mtr Road, N/W

CONTACT US :+919810441077, +919710441077
Add- Office No. 205, Sunrise Tower, Alpha 1 Commercial Belt, Gr.Noida, G.B.Nagar, U.P-2010308